ओ३म्

अलार्म बेल

अर्थात्

ख़तरे का घंटा

एक करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के हथकन्डों का विवरण.

COMPILED

आर्य्य-साहित्य-मण्डल, अजमेर
के
खन्डन मन्डन विभाग द्वारा प्रकाशित।

द्वितीय संस्करण ५०००

प्रतिपुस्तक मूल्य =)

एक करोड़ हिन्दुओं के बचाने का उपाय करिये

प्रतिपक्ष के षड्यंत्र में * सब को समाहित कीजिये

प्रस्तावना

अबतक हिन्दू-जनता में से अधिकांश को यह पता नहीं है कि उनके धर्म को भ्रष्ट करने, नहीं नहीं, उन्हें जड़ मूल से हड़प करने के लिये यवन लोग छुपे २ क्या २ षड्यंत्र रचा करते हैं। जिन २ चालों से उन्होंने ७०९ सौ वर्षों में अपनी इतनी वृद्धि करली है, उन्हीं को अब आगे के लिये सुसंगठित करने और अतिशीघ्र एक करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिये हाल में एक प्रसिद्ध कट्टर मौलवी ख्वाजा हसन निजामी दिल्ली निवासी ने १ पुस्तक "दाइये इस्लाम" लिखी है। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण बहुत ही गुप्त रीति से मुख्य २ मुसलमानों में बांटा गया था। सुना जाता है कि उस में अपनी धर्मोन्नति के कई साधन ऐसे लिखे गये थे, जिन्हें उन्हीं के धार्मिक लोगों ने बहुत लज्जा तथा आपत्तिजनक बताया और इस कारण अब यह दूसरा संस्करण, जिसे अफ़रीका की मुसलमान प्रबन्धकर्तृ सभा की आग्रह पर छापा गया है, बहुत सी चालों से रहित है, फिर भी हिन्दुओं को भ्रष्ट करने के लिये काफी है, हमारे सामने जो प्रति है वह दूसरे संस्करण की है, अतएव जो कुछ इस छोटी सी पुस्तक

में लिखा जावेगा वह सब इसी दूसरे संस्करण के आधार पर लिखा जावेगा । पाठकगण हमारे ख़्वाजा हसन निज़ामी साहब के बताये हुये उपायों पर ध्यान दें ।

उनके सारे हथकन्डों और दाव घातों को हिन्दू जनता पर प्रगट करने से मेरा यह अभिप्राय कदापि नहीं है कि वे सब के सब हथकन्डे हमारे हिन्दू भाई भी करने लगें । मेरा यह सब कुछ लिखने का अभिप्राय यही है कि समस्त हिन्दू जनता उन सब चालों से ख़बरदार होजावे और उनसे अपनी रक्षा कर सके । यदि अब भी हिन्दू जनता ने कुछ ध्यान न दिया तो ख़्वाजा साहब को अपनी मनोरथ सिद्धि में कुछ भी विलम्ब न लगेगा और अतिशीघ्र एक करोड़ हिन्दू मुसलमान बन जावेंगे ।

हमारे बहुतसे पाठकों ने स्कूल व पाठशालाओं में चक्रवृद्धि ब्याज (सूद दर सूद) निकालना पढ़ा होगा, किन्तु उन्होंने १) रु० का सूद दर सूद १) रु० सैकड़ा सालाना के हिसाब से, एक सौ वर्ष का, जो १ लाख से अधिक होजाता है, निकालने का कभी यत्न न किया होगा, तब फिर उन्हें कैसे अनुभव हो सकता है कि आज जितने मनुष्य मुसलमान होते हैं सौ वर्ष बाद उनकी तादाद क्या होगी ? एक करोड़ ख़्वाजा साहब हड़पने की फ़िकर में हैं और हमारे सात करोड़ अछूतों को देश के अन्य

मुल्ला लोग अपने जाल में फँसाने के उपाय सोचरहे हैं। अब पाठकगण सोचें कि उनका क्या कर्तव्य है ? यदि ख्वाजा साहब की बताई हुई समस्त तरकीबों को हमारे पाठकगण कंठस्थ करलें और उनसे सचेत रहने के लिये समस्त हिन्दू जनता को उद्यत करदें तो मैं अपना अहोभाग्य समझता हुआ अपना परिश्रम सफल जानूंगा ।

यहां पर एक बात और लिखदेना उचित है कि इस पुस्तक में 'दाइये इस्लाम' का बिलकुल शब्दार्थ नहीं किया गया, कहीं २ केवल आशय ही लेलिया गया है और कहीं उन्हीं के शब्द ज्यों के त्यों लिख दिये हैं जिस में पाठकों को समझने में सरलता हो ।

भूमिका समाप्त करने के पूर्व इतना और निवेदन करना आवश्यक है कि ख्वाजा साहब का यह लिखना, कि वे हिन्दू मुसलिम एकता के प्रेमी हैं, और किसी द्वेष से इस पुस्तक को नहीं लिखा, कहांतक ठीक है यह तो पाठकगण स्वयम् जान लेंगे, पर हां, मैं कॉंग्रेस का सभासद् होता हुआ यह अवश्य बता देना चाहता हूं कि मेरा अभिप्राय इस पुस्तक को हिन्दी में प्रकाशित करने से मुसलमानों के प्रति घृणा उत्पन्न करने का नहीं है, किन्तु ख्वाजा साहब के बताये हुए हथकण्डों से अपने हिन्दू भाइयों को केवल सचेत करने मात्र का है ।

—लेखक

॥ ओ३म् ॥

अलार्म बेल

अर्थात्
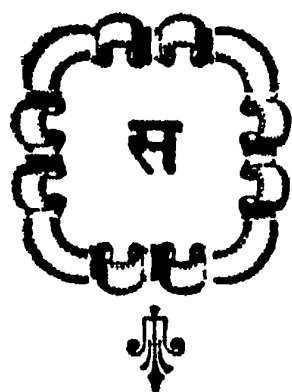
ख़तरे का घंटा

समुद्र में जहाज़ तूफ़ान से घिर गया है, थोड़ी ही देर में उसके सारे मुसाफ़िरों में ख़तरे के घण्टे का शब्द सुनकर खलबली मच गई, जिन लोगों ने उस थोड़े से समय का सदुपयोग करके अपने बचाव का प्रबन्ध किया, वे तूफ़ान से बच गये, जो अपने आलस्य, प्रमाद अथवा भय के कारण कुछ न कर सके, आज दुनियां में उनकी हस्ती का पता नहीं है।

आज भारतवर्ष में वही ख़तरे का घण्टा (Alarm Bell) बज रहा है और पुकार २ कर आने वाले ख़तरे की चेतावनी दे रहा है, फिर भी अचेत रहकर यदि कोई सज्जन समय या किसी व्यक्ति-विशेष को दोष देते रहे तो यह उनका दोष होगा। इसलिये सावधान हो जाइये, हिन्दूरूपी जहाज़ इस समय चारों ओर से तूफ़ान से घिर गया है। अब समय आलस्य, प्रमाद अथवा भय के कारण व्यर्थ बरबाद करने का नहीं है। ७, ८ सौ वर्षों में आपने अपने करोड़ों लाल दूसरों

को दे दिये । किसी समय आप की सम्पत्ति ३३ करोड़ थी और आप को ३३ कोटि (करोड़) देवता के नाम से पुकारा जाता था, अब आप २२ करोड़ रह गये, इस में से ७ करोड़ अछूतों को आप से जुदा करने और विधर्मी बनाये जाने की जो छुपी २ कार्य्यवाहियां बहुत काल से हो रही हैं, उन्हें इस समय लिखने की आवश्यकता नहीं है, अधिकांश पाठकगण उन्हें जानते ही होंगे । इस समय उस मार-काट और लूट-खसोट का भी ज़िकर नहीं किया जावेगा, जो आये दिन मुसलमानों के लिये एक साधारणसी बात हो गई, जिसकी आग दक्षिण में मलाबार से लगाकर पश्चिम में मुलतान और उत्तर में अमृतसर, सहारनपुर तथा मध्य में अजमेर, आगरा, गोंडा और शाहजहांपुर तक पहुंच गई है, यहां पर उस खतरे का भी उल्लेख नहीं किया जावेगा, जिसके कारण क्षयरोग के रोगी की नाईं हिन्दूजाति दिन प्रतिदिन धीरे २ कम होती जाती है और नित्यप्रति बीसियों हिन्दू विधवायें, बच्चे तथा युवक छुपे २ विधर्मी किये जाते हैं। निस्संदेह उपरोक्त लिखे हुए सब खतरों से भी हिन्दू-जनता को सचेत रहना चाहिये, पर ये सब रोग तो क्षय की नाईं उस पर बहुत पहिले से चिमटे हुए हैं और उसे धीरे २ जर्जरित कर रहे हैं। इस समय जो बहुत भारी खतरा है और जिसका वर्णन इस पुस्तक में किया जावेगा, वह ख्वाजा हसन निज़ामी सा० की किताब "दाइये इस्लाम" है । यद्यपि उसमें बताये हुए हथकन्डों का प्रयोग तो मुसलमान लोग बहुत वर्षों पूर्व से कर रहे हैं, पर अब उन तरकीबों को संगठित रूप से कार्य्य में लाया जा रहा है और उनके द्वारा अतिशीघ्र एक करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की घोषणा की गई है, इसलिये उन सब तरकीबों

को जानना और उनसे अपने और अपने भाइयों को बचाना प्रत्येक हिन्दू का कर्त्तव्य है। ऐ हिन्दू-जाति के राजे महाराजाओ, सेठो, साहूकारो, वकीलो, बैरिस्टरो, ऑफीसरो, बाबुओ, नवयुवको, विद्यार्थियो और स्त्री पुरुषो! क्या आपमें अपने धर्म के लिये कुछ भी जोश नहीं है? क्या आप अपने धर्म का प्रचार नहीं कर सकते? यदि प्रचार करके अपने धर्म की वृद्धि नहीं कर सकते तो क्या अपनी मौजूदा बची खुची पूंजी की रक्षा भी नहीं कर सकते? यदि कर सकते हैं तो कब और किस की प्रतीक्षा है? यदि अभी तक कुछ निश्चय नहीं किया तो ख़्वाजा सा० की बताई हुई सब तरक़ीबें, जो नीचे लिखी जाती हैं, बड़ी सावधानी के साथ एक एक करके पढ़ जाइये और फिर निश्चय कीजिये कि क्या आप का कर्त्तव्य है।

ख़्वाजा साहब ने अपनी किताब 'दाइये इस्लाम' में वे हिकमतों, जिनके द्वारा इस्लामी धर्म का प्रचार किया जा सकता और मुसलमानी मज़हब का प्रलोभन दिया जा सकता है, के वर्णन करने के पूर्व 'इस्लाम धर्म की आवश्यकता' पर जो कुछ उस की प्रशंसा करते हुए लिखा है, वह हमारे पाठकों के लिये अधिक रोचक नहीं है, अतएव उसे छोड़ता हुआ "बिरादरी के बल" पर जो कुछ ख़्वाजा सा० ने लिखा है वह नीचे देता हूं।

पाठकगण पुस्तक पढ़ते समय यह ध्यान रक्खें कि ब्रैकेट में जो वाक्य लिखे गये हैं वे लेखक के हैं और मोटे अक्षरों तथा कामा के भीतर बन्द किये हुये ख्वाजा सा० के वे वाक्य हैं जिन पर विशेष विचार करना चाहिये।

——:०:——

बिरादरी का बल

"जा मुसलमान आगरा व मथुरा में मलखानों को आर्य्य बनने से बचाने में लगे हैं या वे मुसलमान जो आगे राजपूतों या दूसरी नौमुसलिम जातियों में काम करना चाहते हैं उन्हें यह बताना आवश्यक है कि हिन्दू जातियों में इस्लाम का प्रचार उनकी बुराई बताने या (मियां साहब को अपनी निर्बलता मालूम होगई) शास्त्रार्थ करने से नहीं हो सकता, इसके लिये दूसरी तदबीरें हैं और उनमें से एक बिरादरी का बल है"।

"पहिले इस्लामी मुल्कों में भी जमाअतों और क़बीलों ने मुसलमानी धर्म नहीं स्वीकार किया था और बड़े २ झगड़े होते थे, किन्तु जब कुरैश ने इस्लाम स्वीकार किया तो हज़ारों आदमी स्वयं आकर मुसलमान बने"।

"यही हाल हिन्दुओं का है चाहे बड़ी जाति के हों चाहे छोटी, यदि उनके प्रतिष्ठित लोग मुसलमान हो जावें तो फिर उन के आधीन सभी हो जावेंगे। इसलिये मलखाना राजपूतों में जो पक्के मुसलमान हैं उनको इस काम में अगुआ करना चाहिये"।

"आर्य्यसमाज को भी सफलता इसी प्रकार हुई है। उन्होंने हिन्दू राजपूत रईसों को मिलाया है और रईस बिरादरी की शान से मलखाने राजपूतों को मुसलमानों के अत्याचारों के मनघड़न्त क़िस्से सुनाकर कहते हैं कि यदि तुम इस्लाम छोड़ दो तो हम तुम को अपनी बिरादरी में मिलालेंगे और तुम से शादी ब्याह भी करने लगेंगे"।

"इसका उत्तर मुसलमानों को यह देना चाहिये कि लालखानी वग़ैरह मुसलिम राजपूत सरदारों को, जो अलीगढ़, बुलन्दशहर, मथुरा, आँगरा, सहारनपुर और मुजफ़्फ़रनगर

वग़ैरह में आबाद हैं और बड़ी २ जागीरों के मालिक हैं और उनमें से कोई २ बहुत पढ़े और जोशीले मुसलमान हैं, बुलावें और उनको मलखानों में लेजावें और ये सरदार केवल इतना कहदें कि यदि तुम इस्लाम में रहोगे तो हम सब तुम से बिरादरी का सा लेनदेन करने लगेंगे, बल्कि मुसलिम राजपूतों के अलावा दूसरी जाति के मुसलमान रईसों को भी बुलाना चाहिये और मलखानों को निश्चय कराना चाहिये, कि इस्लामी बिरादरी बहुत बड़ी है और मलखानों को शादी ब्याह में कोई कठिनता न होगी" (इतने सौ वर्षों क्यों नहीं सुधि ली ?)

"मैं जानता हूं कि यह हिकमत आर्य्यसमाज को मालूम है और राजपूत रियासतें भरतपुर व कश्मीर वग़ैरह इनके असर को मान चुकी हैं और दूसरी रियासतें भी इसमें उनको मदद देने को तैयार हैं फिर भी मुझे मुसलमानों की सफलता निश्चय है, क्योंकि मुसलमानों का वादा सच्चा होगा और आर्य्यों के वादे सच्चे और असली न होंगे, कुछ दिन के बाद जब राजपूत देखेंगे कि आर्य्य बनाते समय तो सबने हमारे हाथ का हलुआ खाया था, अब शादी ब्याह में हमारा कोई साथ नहीं देता (सैकड़ों शादी ब्याह होगये और धड़ाधड़ होरहे हैं) तो वे दुबारा इस्लाम की ओर झुक पड़ेंगे, क्योंकि इनके यहां बराबरी का वर्ताव नहीं है और जात पांत के बन्धन बहुत कड़े हैं (ख़्वाजा साहेब आप सोते हैं या जागते ? ज़रा हिन्दू बनकर देखिये तो सही कि हिन्दुओं ने कितना सरल तरीक़ा रक्खा है) और मुसलमान इस झगड़े से पाक हैं"।

"मैं जानता हूं कि हिन्दुस्तान में नौमुसलिमों में अब भी नीच ऊंच जात का भेद जारी है, किन्तु यह भेद जल्द उलमा

लोग, मिटा सकते हैं (यानी मलखाने राजपूतों में भी नौ-मुसलिम चमार व भंगियों के साथ शादी ब्याह व लेन देन करने के लिये तय्यार कर सकते हैं), किन्तु हिन्दुओं के भेद को आर्य्यसमाज नहीं मिटा सकता (मिटा दिया) इसको म० गांधीजी भी दूर न कर सके"।

"पस ज़रूरत है और बड़ी ज़रूरत है कि मसले बिरादरी पर इस्लाम की सब सभायें व उलमा अच्छी तरह से विचार करें, व्याख्यानों और शास्त्रार्थ से अधिक इसका प्रभाव न पड़ेगा"। (अब शास्त्रार्थ से घबराते हैं)

"अभी हाल में हिज़ हाइनेस सर आग़ाखां ने अपने लाखों हिन्दू चेलों को मुसलमान बनने को कहा मगर जाति के बन्धन के कारण उनके हुक्म को खुदाई हुक्म मानते हुये भी मुसलमान न बने, यदि मुसलमान लोग उन्हें अपनावें और उनकी शादी ब्याह का वादा करें तो आज बीस लाख आग़ाख़ानी हिन्दू खुल्लमखुल्ला मुसलमान बन जावें"।

"जमइयतउल उल्मा को एक विशेष सभा करके इस मसले को हल करना चाहिये, यदि वह हल होगया और मुसलमान क़ौम की हैसियत से इस ज़रूरत को समझ गये तो एक करोड़ हिन्दू इस्लाम में मिल जावेंगे"।

"म यह नहीं कहता कि नसल वग़ैरह के ख़याल को बिलकुल उड़ा दिया जावे, न मैं यह चाहता हूं कि डा० गोर की

राय के अनुसार हर क़ौम में मुसलमान शादियां करने लगें, मेरी इच्छा तो केवल इस बात की है कि शरह के हक़ की रक्षा करके असली शान को दृढ़ किया जावे ताकि नौमुसलिमों को ज्ञात हो कि उनकी बिरादरी बहुत बड़ी है और आपस की हमदर्दी हिन्दुओं से इन में अधिक है"।

"शादी करने के लिये तो हर बिरादरी या उसके पास के नसल वाले आपस में समझौता कर सकते हैं, या जमइयत उलमा उनको उचित सलाह दे सकती है, अलबत्ता मेलजोल और शादियों में शामिल होना ज़रूर चाहिये" (कहिये ख्वाजा सा० अब क्यों बग़लें झांकते हैं ? क्या चमार भंगी मुसलमान होजावें तो आप लोग उनसे शादी ब्याह व लेन देन का वर्त्ताव करेंगे ? यदि नहीं तो फिर विचारों को क्यों धोखा देते और हिन्दुओं को बदनाम करते हैं ?)

"आग़ाखानी व बोहरे आदि बहुत से ऐसे मुसलमान हैं जो मुसलमानों की क़ौम से अलग रहते हैं, यदि उनसे प्रेम करें तो वे भी हमारी ओर आजावेंगे और इससे हमारी ताक़त चौगुनी हो जावेगी"।

"ऐसे मौक़े पर जब कि सर आग़ाखां ने अपने (हिन्दू) चेलों को मुसलमानों की ओर झुकने का हुक्म देदिया है, जमइयत उलमा का फ़र्ज़ है कि वह भी मुसलमानों को इस जमाअत से मेलजोल करने के लिये सलाह दे"।

"सारांश यह कि मुसलमान प्रचारकों को बिरादरी के बल पर ध्यान देना चाहिये जिसमें आर्य्यसमाज की चढ़ाई का सरलता से रद्द हो सके"।

आशा और भय

"प्रत्येक मज़हब आशा और भय पर निर्भर है, मुसलमान प्रचारकों को भी आशा और भय रखना चाहिये, हिन्दुओं का डर और आशा दुनियां की वस्तुओं पर है, किन्तु मुसलमानों को आशा है तो खुदा से और डर है तो खुदा से। इस भेद को मुसलमान फ़कीरों ने जाना है इसी कारण उन्होंने करोड़ों हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया"।

"आर्यसमाज के पास आशा या डर नहीं है, उनके यहां अच्छे व्याख्यानदाता और शास्त्रार्थ करने वाले हैं मगर आत्मिक शक्ति वाले कोई नहीं हैं, हां सनातनधर्मियों में हैं मगर उनके साधु किसी को अपने धर्म में शामिल नहीं करते" (इसी कारण तो करोड़ों हिन्दू मुसलमान होगये पर अब वे आपकी चालाकियों से सचेत होरहे हैं)।

"मुसलमानों में लाखों फ़कीर हैं उनकी आत्मिक शक्ति की घर २ चर्चा है और अनगणित हिन्दू उनके प्रभाव में हैं। आर्य्य या ईसाई चाहे जितनी कोशिश करें हिन्दू लोगों के दिलों से आशा और डर दूर नहीं हो सकता। इस बात को नई रोशनी के लोग भी दूर नहीं कर सकते। हज़ारों पढ़े लिखे हिन्दू व मुसलमान फ़कीरों की आत्मिक शक्ति के क़ायल हैं। एक आदमी के औलाद नहीं होती हर प्रकार के इलाज करके वह थक जाता है, अन्त में किसी मुसलमान फ़कीर की दुआ या जंत्र से लड़का होजाता है, तो फिर चाहे जितना आर्य्य-समाजी या ईसाई उसे मना करे, वह कभी नहीं मानेगा, क्योंकि उसका निश्चय हो जावेगा कि यदि मैं उस फ़कीर की बात न मानूंगा तो मेरा लड़का मर जावेगा"।

"एक बीमार सब इलाज करके थक जाता है, कुछ लाभ नहीं होता, फिर किसी मुसलमान फ़क़ीर के पास जाता है और अच्छा होजाता है। भला फिर कैसे उसका उस पर विश्वास न हो, वह डरेगा कि (मुसलमान होने से) इन्कार करने से दुबारा बीमार हो जाऊंगा"।

(निश्चय इस प्रकार के जाल रचकर बहुत से मुसलमान फ़क़ीर हिन्दुओं को ठगा करते हैं और हज़ारों हिन्दुओं को अपने जाल में फंसा लेते हैं, किन्तु शीघ्र ही उनका भांडा फूट जाता है और दोनों अपने २ किये का फल भोगते हैं, यदि मैं उन सब किस्सों को लिखूं, जहां मुसलमान फ़क़ीरों ने इस प्रकार के जाल फैलाये, और हज़ारों रुपया लूट खसोट कर चलते बने, सैकड़ों हिन्दुओं ने अपना धर्म भ्रष्ट किया, रुपये खोये तब उन्हें पता लगा कि ठीक बात क्या है, तो बड़ी पोथी बन जावे। अतएव बहुतसे क़िस्से न लिखकर एक ही लिखता हूं—ज़ि० रायबरेली के एक ग्राम में एक मियां साहब बैठ गये और यह मशहूर किया कि केवल उनके हाथ का पानी पीने से सब बीमारियां दूर होजाती हैं और आदमी मुंह मांगी मुरादें पाते हैं। भीड़ लगने लगी, थोड़े ही दिनों में हज़ारों का जमघट होने लगा, रात दिन एक मेला सा लगा रहता, बड़े २ पंडित, तिलकधारी आते और उनके हाथ का पानी पीते, हज़ारों रुपये चढ़े, सब कुछ हिन्दुओं ने खोया, कई मास बाद उन फ़क़ीरमियां की असलियत खुली, उनके असली नाम का पता लगा, कई साल से उनके नाम वारन्ट था, अतएव वह गिरफ़्तार किये गये। समाचार-पत्र पढ़ने वाले इस प्रकार के एक नहीं सैकड़ों क़िस्से पढ़ चुके होंगे और अब भी कभी २ पढ़ते ही होंगे)

"ग़रज़ और सैकड़ों काम दुनियां में हैं जिनकी आशा से हिन्दू लोग मुसलमान फ़क़ीरों के पास जाते हैं बड़ी श्रद्धा रखते हैं और उनकी बददुआ से सदा डरते रहते हैं"।

"कोई माने या न माने यह शक्ति केवल फ़क़ीरों में ही होती है और यह आर्य्यसमाज या ईसाई मिशन के लोगों में नहीं होती"।

"इसलिये आगे चलकर मैं उन हिकमतों व तरक़ीबों को बयान करूंगा जो आशा और भय के आधीन हैं और यदि उन्हें नियमित रूप से काम में लाया जावे तो करोड़ों आदमी मुसलमान हो सकते हैं। कुछ वर्षों से मुसलमान फ़क़ीरों ने मुसलमान बनाने का काम छोड़दिया है"।

(पाठकगण ! उपरोक्त कामों के भीतर बन्द ख्वाजा सा० के वाक्यों को ध्यान पूर्वक पढ़िये, किस प्रकार से आशा का प्रलोभन और भय दिखा कर ख्वाजा सा० अपना मतलब पूरा करना चाहते हैं)

"अब मैं उन सब तरक़ीबों की सूची नीचे देता हूं"।

धर्म की वे हिकमतें जिनके द्वारा इस्लामी प्रचार किया जा सकता है

१—ताज़िये और मोहर्रम की रसमें।

२—हज़रत अली और हज़रत इमाम हुसेन की शोहरत।

३—हज़रत बड़े पीर की ग्यारहवीं और उनकी करामातें।

४—जीवित पीरों की करामातें और दुआओं के तासीर की शोहरत।

५—जीवित पीरों की दुआ से बे-औलादों के औलाद होना या बच्चों का जीवित रहना या बीमारियों का दूर होना या दौलत की वृद्धि या मन की मुरादों का पूरा होना।

६—बद्दुआओं (शाप) का भय।

७—अपने मनोरथ में तबाही का डर।

८—वबा, अकाल या और किसी दैवी आपत्ति आने का भय।

९—अज़ान का अभिप्राय बताना और जगह २ उसका रिवाज देना।

१०—गिरोह के साथ नमाज़ पढ़ने का रिवाज देना और उसकी अच्छाई का प्रचार करना।

११-गिरोह के साथ नमाज़ ऐसी जगह पढ़ना जहां उनको दूसरे धर्म के लोग भली प्रकार से देख सकें।

१२—मुसलमानों में जो बराबरी का वर्ताव कार्य्यरूप में जारी है उसकी अच्छाइयां को बताना।

१३—खाने, नमाज़ पढ़ने और शादी विवाहों में मुसलमानों के छोटे बड़े सब आदमियों में बराबरी का वर्ताव होना और नीची जातियों को बताना कि ईसाइयों और आर्य्यों में यह खूबी नहीं है।

१४—फ़ाल, रमल (शगुन), नजूम (फलित ज्योतिष्) व जफ़र के द्वारा।

१५—हिन्दू और मुसलमान फ़कीरों के वाक्यों को गांवों में गाना और उन गानों का घर २ रिवाज देना।

१६—ऐसी मुसलमानी खबरों को फैलाना जिनसे नीची जाति के हिन्दू लोगों को अचम्भा हो और हर जगह उनकी चर्चा होने लगे।

१७—मजजूओं (पागलों) की बड़।

१८—गाँवों और क़सबों में ऐसे जलूस निकालना जिनसे हिन्दू लोगों में उनका प्रभाव पड़े और फिर उस प्रभाव द्वारा मुसलमान बनाने का कार्य्य किया जावे।

१९—नीच जाति के हिन्दू लोगों के बीमारों का बड़े प्रेम के साथ इलाज करना और उन्हें बराबरी का दर्जा देकर उनका हमदर्द होना।

२०—चमार या भंगी यदि मुसलमान बनें तो उनके साथ बड़े २ मुसलमानों को लेकर बड़े मजमों में खाना खाना व गले मिलना और पास बिठाना।

२१—समाचारपत्रों में नीच जाति के हिन्दुओं की मदद करना, जिन्हें बड़ी जाति के हिन्दू घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

२२—गाने वालों को ऐसे २ गाने याद कराना और ऐसे २ नये २ गाने तय्यार करना जिनसे मुसलमानों में बराबरी के वर्ताव की बातें व मुसलमानों की करामातें प्रगट हों और उच्च जाति के हिन्दुओं के बुरे व्यवहारों का भी ज़िकर होवे जो वे नीच जातियों के साथ करते हैं और जिनसे नीच जाति के लोगों को दुःख होता है और उनकी बेइज़्ज़ती होती है।

२३—मुसलमान फ़क़ीरों को ऐसे छोटे २ वाक्य याद कराये जावें, जिन्हें वे हिन्दुओं के यहां भीख मांगते समय बोलें

और जिनके सुनने से हिन्दुओं पर इस्लाम की अच्छाइयां और हिन्दुओं की बुराइयां प्रगट हों।

२४—हिन्दुओं की शादी ग़मी में प्रेम के साथ सम्मिलित होना और विशेष कर नीच जाति के हिन्दुओं से मेलजोल और बराबरी का वर्ताव करना।

२५—चमार, भङ्गी और सब नीच जाति के हिन्दू लोगों की मज़हबी बातों को जानने की कोशिश करना और मुसलमान प्रचारकों को उन्हें छोटी २ किताबों द्वारा बताना।

२६—हिन्दू या नौ-मुसलिम लोगों के सामने अपने आपस के झगड़ों को छुपाना और आपस के मतभेद की बातों को प्रगट न होने देना।

२७—अंग्रेज़ों के मुल्की प्रबन्ध से शिक्षा ग्रहण करना यानी जिस प्रकार वे मुल्कों पर क़ब्जा करते हैं, उन्हें ध्यान-पूर्वक देखकर इस्लाम धर्म के प्रचार में उन्हें वर्तना।

२८—ईसाई मिशन की प्रत्येक बातों पर ध्यान देना और उनकी प्रत्येक बात से ख़बरदार रहना और उनकी जिन २ बातों से अपने प्रचार में मदद मिले, उन्हें अपने यहां जारी करना।

२९—आर्य्यसमाज के प्रत्येक गुप्त व प्रगट आन्दोलन से ख़बरदार रहने के लिये रात दिन प्रयत्न करना और उनकी कोई बात अपने यहां लेने के योग्य हो तो उसे अपने प्रचार में सम्मिलित करना।

३०—दूसरे धर्म व उनके धार्मिक नेताओं को बुरा न कह-

ना और कितना ही जोश क्यों न दिलाया जावे पर सदा ज़ब्त से काम लेना।

३१—शास्त्रार्थ केवल उसी दशा में करना जब विना किये काम न चलता हो, जहां तक सम्भव हो शास्त्रार्थ की बात को टाल देना और अपना काम चुपचाप करना।

३२—समाचारपत्रों में मुसलमान बनाने के तरीक़ों और अपनी सफलता के समाचारों को कभी न छपाना और यदि आवश्यकता पड़े तो ऐसे ढंग से छपाना जिनसे इस्लामी हिकमतों और तदवीरों का भांडाफोड़ जनता में न हो।

३३—इस्लामी धर्म-प्रचारकों को मान, प्रतिष्ठा रहित होना चाहिये और प्रचार में कोई धोखे का काम न करना चाहिये।

३४—जहांतक हो ऐसी बातें सोचना जिनमें धन कम व्यय हो और प्रचारक लालच में न फंस जावें।

३५—आग़ाख़ानी मिशन की हिकमतों को मुस्लिम प्रचारकों को बताना और यदि आवश्यकता हो तो विना किसी तास्सुव के उनको अपने कामों में शामिल करना।

३६—क़ादियानी ढंगों से लाभ उठाना और उन्हें भी अपने कामों मे ज़रूरत पड़ने पर सम्मिलित करना।

३७—मुसलमानों के अन्दर जितने भी फ़िरक़े हैं उन सब को विना किसी तास्सुव के इस्लामी धर्म प्रचार में सम्मिलित करना और एक केन्द्र बनाकर प्रचार के कामों में उस केन्द्र के प्रबन्धकर्ता की आज्ञा-पालन करना।

३८—समस्त इस्लामी प्रचारकों को इस्लाम की शरह का पाबन्द रहना।

३९—अपने प्रयत्नों और हिकमतों को खुदा की मदद पर छोड़ना और हर समय अपनी सफलता पर विश्वास करना, किसी कष्ट से न घबराना, और अन्त में उनका बदला मिलेगा, इस पर विश्वास करके सारी कठिनाइयों को झेलना, यदि इस्लामी धर्म-प्रचार में कोई ऐसी हिकमत करना पड़े जो सच्ची न हो और उस में अपना कोई स्वार्थ हो तो उसे छोड़ देना और खुदा से माफ़ी मांगना। (इससे सिद्ध होता है कि अपना स्वार्थ न हो तो झूठी हिकमतें भी करना चाहिये)।

४०—इस्लामी धर्म-प्रचार के लिये समाचारों को इकट्ठे करने और उन्हें सब जगह पहुंचाने के लिये एक विभाग नियत करना।

जासूस विभाग

२—इस्लामी धर्म का समाचार-विभाग और उसके कर्त्तव्य का विवरण

१—ईसाइयों के जितने और जहां २ मिशन हैं उन के पूरे विवरण महक्मे आला मे रहने चाहियें।

२—आर्य्यों की जितनी और जहां २ समाजें हैं उन की भी पूरी तफ़सील महक्मे आला में रहनी चाहिये।

३—मुसलमानों के इतर और जितनी धार्मिक संस्थायें हैं उन सब के समाचार और विवरण उसी महक्मे आला में होने चाहियें।

४—ईसाई, आर्य्य और अन्य धर्मावलम्बियों के प्रचार के सारे साधनों को जानना चाहिये और उनकी सूची उपरोक्त दफ़्तर में रखनी चाहिये।

५—किसी प्रान्त, शहर, क़सबा, अथवा ग्राम में कोई ऐसी बात हो जिससे इस्लाम को हानि पहुंचे तो उस जगह के जासूसों को अपने प्रान्त के जासूसों के आफ़ीसर के पास ख़त भेजना चाहिये और उस महकमे आला को शीघ्र सूचना देना चाहिये।

६—यह विभाग तार तथा चिट्ठियों के लिये छुपे हुये संकेत नियत करे और उन्हीं संकेतों द्वारा समाचार भेजे और मंगाये जाया करें। किन्तु यह काम की उन्नति पर होना चाहिये आरम्भ में नहीं।

७—किसी ग़ैरमुस्लिम या नौमुस्लिम जाति में ईसाई या आर्य्यों का कोई प्रचारक जावे और वहां इस प्रकार का कोई कार्य्य आरम्भ करे तो अतिशीघ्र उस जगह के जासूस को अपने महकमे में सूचना देनी चाहिये।

८—किसी जगह रक्षा या प्रचार की आवश्यकता हो तो खुफिया लेखक को सूचित करना चाहिये।

९—जहां रक्षा या प्रचार का काम करना हो वहां जासूस विभाग को अपने आदमी नियत करने चाहियें, जो वहां के रहने वालों के विचार, रसम और रिवाज से जानकारी रखते हों।

१०—प्रयत्न करना चाहिये कि मुसलमान विना कुछ लिये यह सब काम करें और यदि ख़र्च की कहीं आवश्यकता पड़े तो बहुत थोड़ा व्यय करना चाहिये। अंग्रेज़ी जासूस विभाग की तरह अंधाधुन्ध व्यय न किया जावे।

११—अंग्रेज़ी खुफ़िया पुलिस और साधारण पुलिस वालों से छुपे छुपे यह तय करलेना चाहिये कि इस्लाम धर्म के विरोध में हिन्दुओं की सब बातों और उपायों को वे अपने महकमे को बता दिया करें या अपने जासूस उनके पास जाकर सब भेद लेलिया करें।

१२—खुफ़िया और साधारण पुलिस के समस्त मुसलमान अहलकारों को चाहिये कि यदि हमारे महकमे के जासूसों को भेद देना मुनासिब न समझें तो सीधे हमारे समाचार विभाग के आलादफ़्तर को सारी खबरें भेज दिया करें और परलोक का फल प्राप्त करें।

(सरकार को उपरोक्त दोनों पैरों पर विशेष ध्यान देना चाहिये)

१३—मुसलिम प्रचारकों के चाल चलन की भी पूरी निगरानी रखनी चाहिये, जासूस हर समय इसका ध्यान रक्खें, किन्तु अपनी निजू अदावत के कारण किसी को बदनाम न करें नहीं तो खुदा के सामने उन्हें जवाब देना होगा और महकमे आला के सामने भी उस खबर के सच न होने पर लज्जा उठानी पड़ेगी।

१४—ईसाइयों व आर्य्यों के केन्द्रों या उनके लीडरों के यहां से उनके खान्सामाओं, बहरों, कहारों, चिट्ठीरसाओं, कम्पाउन्डरों, भीख मांगनेवाले फकीरों, झाड़ू देने वाली स्त्री या पुरुषों, धोबियों, नाइयों, मज़दूरों, राजों

(सिलावटों) और खिद्मतगारों आदि के द्वारा ख़बरें और भेद प्राप्त करना चाहिये।

(हिन्दुओं को एक एक शब्द नोट करलेना चाहिये और बचने का उपाय करना चाहिये)।

१५—उनके यहां के नये २ भेदों और कामों की जानकारी की आवश्यकता है, ऐसी बातें, जिनका ज्ञान विना उस प्रयत्न के हो सकता है, जानने की आवश्यकता नहीं है।

१६—जो लोग यह ख़बरें लावें उन्हें परलोक के फल का प्रलोभन दिया जावे और यदि आवश्यकता पड़े और ख़बर लाने वाला मांगे तो उस ख़बर की महत्ता देखकर थोड़ा बहुत धन भी दिया जावे।

१७—इलाक़ों के महकमे में केवल उन्हीं मुसलमान अफ़सरों को नियत किया जावे, जिन्हें अंग्रेज़ी महकमे की, खुफ़िया पुलिस का तजुरबा हो और दिल में इस्लाम का दर्द भी रखते हों या जिनकी योग्यता अच्छी हो और ईमानदार भी हों।

१८—घूमनेवाले, फ़क़ीर, रम्माल, नजूमी (फलित् ज्योतिष् बताने वाले), पागल फ़क़ीर, तावीज़ (जन्त्र) देने वाले, अमल करनेवाले, पटवारी, अन्धे, भीख मांगनेवाले, बने हुये ग़रीब भिखमंगे, भीख मांगनेवाले स्त्री आदि जो घरों में जा सकें, तरकारी बेचनेवाली स्त्री पुरुष और हिन्दुओं के यहां के नौकरों से भी ख़बरें पहुंचाने का काम लेना चाहिये। (पाठक ! इन बातों को नोट करिये)

१६—इस बात का पूरा २ ध्यान रखना चाहिये कि खबरें देनेवालों से किस प्रकार की खबरें मंगाई जावें और उनसे ऐसे ढंग से बात की जावे जिससे उन्हें कष्ट न हो और वे अपना भेद दूसरों पर प्रकट न कर सकें, अतएव उनकी समझ और अक़ल को पहिले परख लेना चाहिये।

तात्पर्य यह कि खबरों के मंगाने और पहुंचाने का काम बहुत छुपे हुये और होशियारी से लेना इस्लामी धर्म के प्रचार के लिये अत्यन्त आवश्यक है, किन्तु जितना आवश्यक है उतना ही कठिन भी है, इस कारण यह काम केवल तजुर्बेकार आफ़िसरों के ही द्वारा कराना चाहिये।

नोट—उपरोक्त बताये हुये साधनों पर कुछ टीका टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं, पाठकगण भली प्रकार समझ सकते हैं कि किस प्रकर उनकी रक्षा हो सकती है। कोई भी हिन्दू ऐसा न होगा कि जिसको दफ़ा १४ व १८ में बताये हुये आदमियों से काम न पड़ता हो, इन्हीं लोगों से नहीं वरन् मुसलमान चूड़ीवालों, बिसाती, रंगरेज़ तथा फेरी वालों से भी रात दिन काम पड़ता है, करोड़ों हिन्दुओं के यहां मुसलमान चपड़ासी, चौकीदार, कोचवान, सिपाही तथा क्लर्क आदि का काम करते हैं, इन सब के जासूसी और भेदों का काम करने पर हिन्दू लोग अपनी रक्षा का क्या उपाय कर सकते हैं (उन्हें बहुत सोच विचार कर कुछ न कुछ निश्चय करना चाहिये)

३-प्रत्येक मुसलमान को प्रचारक बनना चाहिये

यह बड़ी भूल है कि केवल आलिम और बुजुर्ग लोगों पर ही इस्लाम के प्रचार का भार रक्खा गया है, इस्लाम ने

प्रत्येक मुसलमान पर प्रचार का कार्य्य करना आवश्यक ठहराया है, किन्तु बहुतसे मुसलमान अपने बल को समझते ही नहीं, अतएव उन्हें यह बताना ज़रूरी है कि वे मुसलमान बनाने में क्या क्या काम कर सकते हैं।

नीचे एक सूची दी जाती है जिसके द्वारा प्रत्येक मुसलमान अपना अपना काम निर्धारित कर सकता है। यदि उसके अनुसार प्रत्येक गिरोह में प्रचार का कार्य्य आरम्भ कर दिया गया और प्रत्येक मुसलमान ने उत्साह और सत्यता से काम किया, तो थोड़े ही समय में अनगणित नये आदमी मुसलमान होजावेंगे।

४-लड़ाई के दो रुख़ होते हैं

मज़हबी प्रचार ज़बान और अमल की एक लड़ाई है, लड़ाई में सदा जीत ही नहीं होती कभी हार भी होती है। अतएव मुसलमानों को यदि कभी असफलता भी हो तो निराश न होना चाहिये, क्योंकि प्रयत्न और परिश्रम करनेवालों से ख़ुदा ने वादा किया है, कि अन्त में जीत उन्हीं की होगी।

५-सूची मुसलमान गिरोहों की जिन्हें काम करना चाहिये

१—मशायख़ (बुज़ुर्ग लोग), २—उलॅमा (पण्डित), ३—वालियान रियासत (मुसलमान नवाब वग़ैरह), ४—काश्तकार (किसान), ५—दस्तकार (कारीगर लोग), ६—तज्जार (दुकानदार लोग), ७—मुलाज़िम पेशा लोग, ८—राजनैतिक लीडर, सम्पादक, कवि और पुस्तकें लिखने वाले लोग, ९—डाक्टर व हकीम, १०—गानेवाले, ११—भीख मांगनेवाले, १२—ख़बर लाने और लेजाने वाले।

उपरोक्त १२ गिरोहों को निम्नप्रकार से बांटा गया है—

१—मशायख़

१—सज्जादा नशीन—ये वे लोग हैं जो किसी दरगाह के या किसी बड़े बुजुर्ग के वारिस या ख़िलाफ़त के तौर पर अधिकारी हों, उनमें से कोई २ चेला भी बनाते और धर्म-उपदेश भी करते हैं और कोई २ केवल जागीरदार होते हैं या शिष्यों की नज़र नियाज़ पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं और धर्म-उपदेश नहीं करते।

ये सब लोग मुसलमान बनाने का काम कर सकते हैं, यदि वे मुरीद बनाते और उपदेश देते हैं तब अपने बुजुर्गों के रिवाज के अनुसार मुसलमान बनाने का काम आरम्भ करदें और स्वयं या अपने आधीन लोगों के द्वारा मुरीदों के इलाक़ों में, जहां हिन्दू या नौमुसलिम हों, उन्हें मुसलमान बनाने और नौमुसलिमों को समझाने का उचित प्रबन्ध करें और प्रत्येक मुरीद (चेला) को हुक्म दें कि वे नीचे लिखे हुये कामों में से कोई न कोई काम अपने ज़िम्मे लें। जिनके यहां मुरीद वग़ैरह बनाने या उपदेश देने का काम नहीं होता, उनको चाहिये रुपये से मदद दें और अपने आधीन लोगों से मुसलमान बनाने का काम लें या स्वयं नीचे लिखे किसी काम को अपने हाथ में लें।

२—मुरीद करने वाले फ़क़ीर—ये किसी दरगाह आदि के सज्जादा नशीन नहीं होते, किन्तु इन्हें मुरीद करने की आज्ञा होती है, उनको भी चाहिये कि अपने पीर की आज्ञानुसार मुसलमान बनाने का काम करें, अनपढ़

मुसलमानों को रोज़ा नमाज़ और इस्लामी अक़ीदों का उपदेश दें और यह भी प्रयत्न करें कि हिन्दुओं में उनकी मुरीदी का असर पड़े, इसके लिये वे मुझ से पत्रव्यवहार कर सकते हैं।

३—नियाज़ व मौलूद शरीफ़ करने वाले--ये लोग वे हैं जो मुरीद नहीं करते पर उर्स करते हैं। ग्यारहवीं और मौलूद की महफ़िलें उनके यहां होती हैं, उनको चाहिये कि मजलिसों में हिन्दुओं को भी बुलावें ताकि बुज़ुर्गों का रूहानी असर उनको इस्लाम की ओर झुकावे।

४—तावीज़ (जन्त्र) व गन्डे देने वाले—इनमें से कोई मुरीद भी करते हैं और कोई मुरीद नहीं करते, इनको चाहिये कि जब कोई हिन्दू इनके पास आवे तो उसको इस्लाम की खूबियां बतावें और मुसलमान होने का लालच दें और अनपढ़ मुसलमानों को इस्लाम की आवश्यक बातें समझावें।

५—घूमने वाले फ़क़ीर—ये बहुत बड़ा काम कर सकते हैं, इनको देहातों में जाने का अवसर प्राप्त होता है, इनका कर्तव्य होना चाहिये कि देहात की नीच हिन्दू जातियों को मुसलमानों की खूबियां बतावें और औलिया लोगों की करामातों के क़िस्से भी सुनावें।

पढ़े लिखे मुसलमानों का कर्तव्य है कि जब कभी उनको कोई घूमनेवाला फ़क़ीर मिले तो यह मेरा (ख्वाजा साहब का) सन्देशा सुना दें।

६—रमल, नजूम व जफ़र का काम करने वाले—इनको मशायख़ के गिरोह में इस कारण रक्खा गया है कि एक ग़ैबी काम का इनसे संबन्ध है, ये भी मुसलमान बनाने का काम बहुत अच्छी तरह कर सकते हैं, उनको चाहिये कि जब अपने सवाल करने वालों से बातचीत करें तो मौक़ा देखकर इस्लाम की भी कोई बात सुनादें और यदि सम्भव हो तो अपने रमल व नजूम के जवाबों को इस ढंग से कहें कि जिससे सवाल करने वालों पर इस्लाम का असर पड़े।

७—मजज़ूब (कुछ २ पागल)—इनकी बात का बहुत प्रभाव पड़ता है, मुसलमान पाठकों को चाहिये कि जब कोई मजज़ूब मिले तो उसको मुसलमान बनाने की ज़रूरत बतावें जिसमें उसका ध्यान इस ओर जम जावे और यह अपनी बातों से कुछ काम कर सके।

२—उलॅमा।

१—फ़तवा देने वाले सुन्नी व शियॉ आलिम लोग—इनका काम रक्षा व संशोधन करने का है, इनके पास जब कोई फ़तवा मांगने आवे तो एक दो बात दीन के संबन्ध की अपनी ओर से अलग काग़ज़ पर लिख दिया करें या ज़बानी उसको सुना दिया करें।

२—पढ़ाने वाले सुन्नी व शिया—इनका काम अपने शिष्यों को रोज़ मुसलमान बनाने के लिये उत्साहित करने का है और यदि कोई हिक्मत उन्हें सूझ पड़े तो वह भी बता दिया करें।

३—व्याख्यानदाता-इन्हें चाहिये कि हर जगह मुसलमान बनाने के संबन्ध में उत्साहवर्धक उत्तेजना लोगों में उत्पन्न करें, अनपढ़ मुसलमानों को मुसलमानी अक़ीदे सुनायें और आपुस के मतभेद की बातों का वहां ज़िकर न करें।

४—शास्त्रार्थ करने वाले आलिम-हिन्दुओं और ईसाइयों के मसलों को इन्हें अच्छी तरह से जानना चाहिये और एक २ मसले में एक २ आलिम को इस प्रकार से तय्यार होना चाहिये कि फिर उनका कोई मुक़ाबिला न कर सके यानी १-ईसाइयों के बाप, बेटा और रुहुल क़ुदुस पर पूरी तय्यारी करे, १-मसीह के संबन्ध में तैयार हो, उनकी मज़हबी बुराइयों के बयान करने में निपुण हो, १-आर्य्यसमाज के ईश्वर, जीव व प्रकृति के मसले पर खूब तय्यारी करे, १-आवागमन पर काफी मसाला इकट्ठा करे, १-नियोग को ले ले इत्यादि २ और जिस प्रकार से आंख व कान आदि के अलग २ डाक्टर होते हैं उसी प्रकार शास्त्रार्थ करने वालों को भी अलग २ एक एक विषय में तय्यारी करनी चाहिये।

५—मसजिदों के इमाम-इनको हर नमाज़ के बाद साधारणतया और जुमाँ की नमाज़ के पश्चात् विशेषतया सब लोगों को मुसलमान बनाने और मुसलमानों की इसलाह (संशोधन) की सरल रीतियां बताना चाहिये।

६—क़ाज़ी--इनको ब्याह के समय सब इकट्ठे हुए लोगों को यह बताना चाहिये कि किन २ औरतों से ब्याह करना हलाल और किन २ से हराम है और स्त्री पुरुष के एक दूसरे पर क्या २ हक़ हैं। अनपढ़ क़ाज़ियों

को आवश्यक मसले जानना चाहिये और "दाइये इस्लाम" के पाठकों को चाहिये कि अनपढ़ क़ाज़ियों को आवश्यक मसलों के सीखने के लिये विवश करें।

७—देहाती मदरसों के अध्यापक—ये बहुत अच्छा काम कर सकते हैं (क्योंकि इन मदरसों में हिन्दू बच्चे भी पढ़ते हैं) इनके पास अपने धर्म-प्रचार और धर्म-वृद्धि (यानी मुसलमान बनाने) के पर्याप्त साधन हैं। इनको चाहिये कि महक्मे आला से पुस्तकें मंगाकर लड़कों और उनके माता पिताओं को सुनायें और गांव में जो हिन्दू लोग हों और विशेषकर नीच जाति के हिन्दुओं को इस्लाम की खूबियां बताया करें और मुसलमान होने के लिये प्रोत्साहित करें।

८—दीनी इल्म पढ़नेवाले विद्यार्थी—इनको अपना कुछ समय बचाकर उसे पास के मोहल्लों में इस्लाम की खूबियां बताने और मुसलमान बनाने में ख़र्च करना चाहिये।

९—अंग्रेज़ी पढ़ने वाले विद्यार्थी—इन्हें भी कुछ समय बचाकर धर्म-प्रचार में ख़र्च करना चाहिये और मुसलमान बनने के लिये लोगों को तय्यार करना चाहिये, खबरें लाने और ले जाने का काम भी इन्हें करना चाहिये।

१०—व्याख्यान देने या पढ़ाने वाली स्त्रियां—इनको मुसलमानी मसले स्त्रियों में बताना चाहिये, इससे ही उन्हें मुसलमान बनाने का सवाब (फल) मिलेगा।

३-आलियान रियासत।

भारतवर्ष में लगभग एक सहस्र वर्ष मुसलमानों ने राज्य किया, किन्तु फिर भी हिन्दुओं के मुक़ाबले में मुसलमानी रियासतें बहुत कम हैं, इससे यह स्पष्ट है कि मुसलमान बादशाहों ने अपनी क़ौम से अधिक हिन्दू क़ौम के बढ़ाने की कोशिश की थी, किन्तु आर्य्यसमाजी लोग उन्हीं दानी धर्मात्मा बादशाहों को बदनाम करते हैं और कहते हैं कि मुसलमान बादशाह बड़े ज़ालिम थे (इसमें सन्देह ही क्या है, ख़्वाजा सा० ने हिन्दू रियासतों के अधिक होने से जो यह नतीजा निकाला है कि मुसलमान बादशाह हिन्दू क़ौम को बढ़ाने का प्रयत्न किया करते थे कितना हास्य, नहीं नहीं, लज्जाप्रद है, हिन्दुओं के मुल्क में इतने थोड़े समय में इतने अधिक मुसलमानों का होजाना ही उनके कट्टरपन तथा जुल्म का प्रत्यक्ष प्रमाण है)

हिन्दू रियासतों में खुल्लम खुल्ला पं० मदनमोहनजी मालवीय के आन्दोलन से हिन्दी भाषा का हुक्म होगया किन्तु मुसलमान रियासतों में हैदराबाद व भूपाल के सिवाय बहुत कम रईसों को उर्दू का ख़याल है (हिन्दी का इतना आन्दोलन करने पर भी अबतक बीसियों बड़ी २ हिन्दू रियासतों में उर्दू जारी है पर कितनी मुसलमान रियासतें हैं जहां हिन्दी का दख़ल है ? ज़रा ख़्वाजा सा० जांच तो करें, शोक है उनके इस तास्सुब पर)

ऐसे ही मुसलमान बादशाहों पर यह दोष लगाया जाता कि उन्होंने हिन्दुओं को जबरन मुसलमान बनाया, किन्तु यह बिलकुल ग़लत है, यदि ठीक होता तो आज एक भी हिन्दू

इस मुल्क में बाक़ी न रहता, सब मुसलमान होजाते। किन्तु कुछ मुक़ामों के अतिरिक्त सब जगह हिन्दू अधिक हैं (पाठकगण देखिये ख़्वाजा सा० के तास्सुब को, मुसलमानी समय के इतिहास आदि सब को ख़्वाजा सा० झुठला कर दिन दोपहर ही आंख में धूल डाल रहे हैं। अजी ख़्वाजा साहब! मुसलमान बादशाहों ने हिन्दुओं के साथ जो कुछ किया उसके लिये इतिहास तथा आप लोगों का ७ करोड़ होना ही प्रत्यक्ष प्रमाण है, रहा यह कि एक भी हिन्दू बाक़ी न बचता, सो इसके लिये इतना ही कहना पर्याप्त है कि, जब कि आप सबों ने एड़ी चोटी लगाकर एकदम तबलीग़ इस्लाम की घोषणा करदी है, तब देखना चाहिये कि कोई हिन्दू बचता है या नहीं। अजी हज़रत! यह क़ौम वह है जिस पर आप जैसे अनेकों के इससे भी बढ़कर ज़ुल्म और अत्याचार हुए हैं पर इसकी हस्ती नहीं मिटी)

सारांश यह कि अब आवश्यकता है कि मुसलमान रियासतें भी मुसलमानों के बढ़ाने की ओर ध्यान दें (ध्यान कब नहीं दिया था) जब कि भरतपुर और कश्मीर वग़ैरह हिन्दू रियासतों ने खुला खुली मुसलमानों को हिन्दू बनाने का काम जारी कर दिया है, (बिलकुल झूठ व बनावटी इलज़ाम) तब मुसलमान रियासतों को भी देर न करना चाहिये (आपके लिखने से बहुत पहिले ही मुसलमानी रियासतों में बड़े वेग के साथ यह कार्य्य जारी होगया है) यह कोई राजनैतिक विषय नहीं है जिसमें अंग्रेज़ी सरकार हस्तक्षेप करें, बरन यह १ मज़हबी और निजू बात है।

मैं यह नहीं चाहता कि रियासतों के नवाब अपनी हिन्दू रियाया पर कुछ जब्र करें या इस प्रकार से उन्हें मुसलमान

बनावें कि जो रियाया के अधिकारों के विरुद्ध हो, मेरी इच्छा तो यह है कि इस्लामी नियमों के अनुसार (तलवार स्वीकार करो या धर्म) बहुत नर्मी और प्रेम से उनको इस्लाम की ओर लाया जावे (क्या नर्मी, प्रेम और सच्चाई प्रगट करने पर कोई मुसलमान बनना स्वीकार करेगा ?)

इसकी सूरत यह है कि हरएक रियासत अपने यहां १ महक्मा मुसलमान बनाने का जारी करै, जो तमाम रियासत के रहने वालों की मज़हबी बातों पर विचार करके मुसलमान बनाने के उचित तरीक़े जारी करे। (हिन्दू रियासतों को इस पर ग़ौर करना चाहिये)।

रियासत के मध्यम श्रेणी के सब कर्मचारियों को आज्ञा देना चाहिये कि वे होशियारी और मुनासिब हिकमतों से रियाया को मुसलमान बनाने का प्रयत्न करें (एक दम से बिना किसी हथकंडे के मुसलमान करने में रियाया के भड़क उठने का भय है, इस कारण ख़्वाजा साहेब ने ऐसा लिखा मालूम देता है) सब से अधिक अछूत और नीच जाति के लोगों को मुसलमान बनाने के लिये प्रयत्न करना चाहिये।

१—मुझको अल हज़रत खुसरो दक्खिन (नवाब हैदराबाद) से बहुत कुछ आशायें हैं और अल्ला ने उन्हें हज़ूर मारूफ़ की सी सिफ़त दी है, वह चाहें तो सब कुछ हो सकता है (आपके लिखने की आवश्यकता नहीं वहां आप ही आप होरहा है)

जनाब बेगम साहबा भूपाल को तवज्जह यदि इधर हो जावे तो बेशुमार आदमी मुसलमान हो सकते हैं (उनकी तवज्जह इधर गई हो या न गई हो पर वहां आप का

मनोरथ सफल हो रहा है) बेगम सा०, उनके पुत्र और ओहदेदार मुझ से अधिक इस आवश्यकता को समझ सकते हैं।

नवाब सा० भावलपुर अब्बासी नसल से हैं। अब्बासियों ने इस्लाम की जो सेवायें की हैं वह सब को ज्ञात हैं, समय आ गया है कि अब्बासी शहज़ादे अपने बुजुर्गों के नाम को ज़िन्दा करके दिखावें, भावलपुर के इलाक़े में मुसलमान बनाने का बड़ा मैदान है।

नवाब रामपुर, जावरा, टोंक, पालनपुर और जूनागढ़ आदि को भी इस ओर ध्यान देना चाहिये।

मुझे मंगरोल काठियावाड़ के नवाब सा० शेख़ जहांगीर मियां से पूरा यक़ीन है कि वह इस मैदान में सब से अधिक काम करेंगे।

रियासतों के नवाबों को किस ढंग से काम करना चाहिये, इसकी सलाह मैं नहीं देना चाहता, (सब कुछ बतला तो दिया अब तलवार चलवाना बाक़ी है) क्योंकि हर रईस की रियासत के जो हालात होते हैं उनको वे स्वयं जानते हैं और उन्हीं के अनुसार उन्हें काम करना चाहिये।

जिन रियासतों के ओहदेदारों को यह किताब मिले उन्हें चाहिये कि वे रियासत के हाकिमों को इसकी ख़ास २ बातें सुनायें।

२—दूसरी छोटी २ जागीरों और जमींदारियों के मुसलमान मालिक भी नवाबों के बराबर काम कर सकते हैं, वे अपने आधीन लोगों को जो आज्ञा दें, वे पूरी हो सकती

हैं, अछूत और नीच जाति के लोगों से प्रेम करके उनके बच्चों को इस्लामी तालीम दी जावे और खुद उनको मुसलमान होने का लालच दिया जावे और अपने असर से ईसाई और आर्य्यों को अपने इलाके में काम करने से रोका जावे (क्या यही आपकी ईमानदारी है ? अपने धर्म की बातें सुनाइये और आर्य्य तथा दूसरों को भी अपने धर्म की बातें सुनाने दीजिये, फिर देखिये लोग किसे ग्रहण करते हैं)

३—बिरादरियों के चौधरी व पंच बड़ा काम कर सकते हैं उनके अन्दर व्याख्यानदाताओं और बड़े २ रईसों से भी अधिक बल होता है, वे यदि चाहें तो बात की बात में बहुतसे आदमियों को मुसलमान बना सकते हैं, बिरादरी का ज़ोर बड़ी चीज़ है, उनको चाहिये कि नर्मी व हिक्मत के साथ और यदि आवश्यकता पड़े तो बिरादरी का ज़ोर दिखा कर बिना किसी ज़्यादती के नीच जातियों को मुसलमान बनावें।

४—नम्बरदार व ज़ेलदार—इनका प्रभाव भी मुसलमान बनाने में बहुत काम दे सकता है, अपने २ इलाक़े में नम्बरदार और ज़ेलदार स्वतन्त्र हाकिम होते हैं, उनको चाहिये कि इस्लाम का हक़ अदा करें और नीच जातियों को मुसलमान बनाने में लग जावें।

५—बड़ी २ रियासतों के ओहदेदार—ये एक तो अपने हाकिमों का ध्यान इधर आकर्षित कर सकते हैं दूसरे स्वयं भी अपने आधीन लोगों को मुसलमान बना सकते हैं।

इन पांचों क़िस्म के लोगों को अछूत और नीच जाति के लोगों को मुसलमान बनाने और उनके लिये मुसलिम मकतब (पाठशालायें) खोलने का प्रयत्न करना चाहिये।

ऐ भाइयो! होशियार हो जाओ, दुश्मन तुम्हारे भाइयों को बेदीन व मुरतिद (हिन्दू) बनाना चाहते हैं और इस्लाम तुम को पुकार कर कहता है कि उठो, मेरा हक़ अदा करो, ताकि क़यामत के दिन खुदा व रसूल के सामने तुम लज्जित न हो, (क्या यही अपील हमारे हिन्दू भाई भी न सुनेंगे? क्या मुसलमानों द्वारा दिन दहाड़े अपनी जाति की लूट होते देखते रहेंगे? मैं भी यह आप लोगों से विनती करता हूं कि ऐ हिन्दू भाइयो! उठो बहुत सो चुके, ७ करोड़ की चोरी तुम्हारी हो गई, ७ करोड़ अछूत और १ करोड़ अन्य लोगों की चोरी, नहीं २ लूट होने वाली है, अपनी पूंजी की रक्षा करो, नहीं तो शीघ्र ही २२ करोड़ के १४ करोड़ ही रह जाओगे और फिर धीरे २ शेष १४ करोड़ मुसलमानों के शिकार बन जावेंगे)

४—काश्तकार

खेती करने वाले लोगों को नीच जाति और अछूत क़ौमों से मिलने, उनसे काम लेने और उनके साथ काम करने के लिये बहुत मौक़ा होता है, उनका भी कर्तव्य है कि वे उन्हें मुसलमान बनाने का प्रयत्न करें और जब वे मुसलमान हो जावें तो उनके साथ सच्चे भाई के तुल्य हमदर्दी करें।

इस पेशा में माली, बाग़बान और हर प्रकार के खेती करने वाले मज़दूर वग़ैरह शामिल हैं। आलिम लोगों को चाहिये कि वे इन्हें इस्लाम के मसले सिखावें, जिसमें ये हिन्दुओं को मुसलमान बना सकें। साधारण और ग़रीब लोगों में दीन की सेवा का जोश अधिक होता है।

५—दस्तकार

दस्तकारों की जमाअत बहुत बड़ी है, सोने, चांदी, लोहे, मिट्टी, लकड़ी, पत्थर, रुई, कपड़े और कागज़ के काम करने वाले, तसवीर खींचने वाले, और हर प्रकार के कारीगर तमाम शहरों और देशों में पाये जाते हैं, आलिमों को चाहिये कि पहिले उन्हें इस्लामी मसलों से आगाह करें पीछे उन्हें मुसलमान बनाने का काम करने के लिये प्रोत्साहित करें, ये लोग बहुत अच्छी तरह और सच्चे जोश से इस काम को कर सकते हैं।

६—तिजारत करने वाले

प्रोफेसर आरनल्ड ने लिखा है कि इस्लाम को बुजुर्गों और तिजारत करने वालों ने फैलाया था, अब वह समय है कि तिजारत करने वाले अपने कर्त्तव्य को भूल गये हैं और जानते भी नहीं कि उनके पूर्वजों ने क्या २ काम किये थे, आवश्यकता है कि ये लोग अपने पुराने कर्त्तव्य को याद करें और मुसलमान वनाने का कार्य्य फिर से आरम्भ करदें।

थोक बेचने वालों के पास दूर २ से व्यापारी आते हैं, उन को चाहिये कि प्रत्येक व्यापारी को इसलाम का सन्देसा दें। खुर्दा बेचने वालों का सम्बन्ध साधारण ग्राहकों से होता है, दूकान पर बैठे दावत इसलाम का काम कर सकते हैं। न पैसे का खर्च है और न समय का और मुफ्त में सवाब (पुण्य) मिलता है, उनको चाहिये कि जब नीच जाति के लोग कोई चीज़ लेने आवें तो बड़े प्रेम और नर्मी से उन्हें मुसलमान बनने का लालच दें और मुसलमानों में जो बराबरी का बर्ताव होता है वह उन्हें बतावें।

फेरी करने वाले दुकानदारों को बड़ा मौक़ा है वह घरों में जाकर स्त्रियों को इस्लाम की खूबियां बयान कर सकते हैं, किसी दूर के मुल्क में जाकर भी इस्लामी दावत दे सकते हैं, इस्लाम इन्हीं घूमने वाले सौदागरों ने फैलाया था, दल्लाली का पेशा भी इस्लाम की दावत के लिये उचित है। जो लोग दल्लाल होते हैं उन्हें हर दूकान पर जाना पड़ता है, चार बातें व्यापार की करें तो एक इस्लाम की बात भी सुना दें।

(क्या हिन्दू लोग अपनी स्त्रियों को फेरीवालों को अपने घर बुलाने व उनसे वस्तुयें लेने से न रोकेंगे ? कितनी हिन्दू स्त्रियां इन फेरी वाले मुसलमान सौदागरों से भ्रष्ट की जाती हैं यह किसी हिन्दू ने सोचा है ?)

७—नौकर पेशा लोग

दफ़्तरों के बड़े ओहदेदार यदि आर्य्य हों तो वे बड़े जोश से काम करते हैं। मुसलमान ओहदेदारों को चाहिये कि वे भी आर्य्यों की तरह अपने सच्चे मज़हब के फैलाने का ध्यान रक्खें। अपने अधीन लोगों को इस्लाम की ओर लालच दिलाने का पूरा अवसर उनके पास है।

सब से अधिक और उत्तम काम पटवारी कर सकते हैं उनको हर गांव में जाना होता है, यदि वे नीच जाति के लोगों को इस्लाम की दावत दें तो बड़ा लाभ होगा।

पटवारियों की तरह देहाती पोस्टमास्टर भी सरलता से काम कर सकते हैं। जब कोई नीच जाति का हिन्दू डाकघर

में आवे (जब कि वह सरकारी मकान और सरकारी ड्यूटी पर होगा) तो उससे दो बातें इस्लाम की कर लेनी चाहिये। धीरे २ उसका प्रभाव पड़ेगा।

देहात के पुलिस अफसर व सिपाही नर्मी और प्रेम से नीच लोगों को मुसलमान करना चाहें तो सफलता हो सकती है। (सरकार से तनख्वाह पावे काम मुसलमानों का करे कैसा अन्धेर !)

नहर के मुलाज़िमों को भी देहात में जाना पड़ता है, वे भी नीच जाति के लोगों को मुसलमान बनाने का काम कर सकते हैं।

डाक्टर और कम्पाउन्डर लोगों का साधारण मनुष्यों से सम्बन्ध रहता है, उनको चाहिये कि रोगियों का ऐसे प्रेम से इलाज करें जिससे मुसलमानों का भ्रातृभाव उन पर प्रगट हो और मुसलमान होने का उन्हें लालच दिया जावे।

ख़ुफ़िया पुलिस के आदमी इस्लामी खबरें पहुंचाने का काम भी कर सकते हैं और दावत इस्लाम का फ़र्ज भी उन्हें अदा करना चाहिये क्योंकि उन्हें जगह २ जाना पड़ता है।

खानों, मिलों और कारख़ानों के वे बड़े २ ओहदेदार, जिनके नीचे कुछ आदमी हों, बड़ी सफलता से मुसलमान बना सकते हैं, क्योंकि मज़दूर बहुधा नीच लोग होते हैं, यदि वे मुसलमान बनाने की कोशिश करें तो हज़ारों मज़दूर मुसलमान हो सकते हैं।

अंग्रेज़ों के ख़ानसामे व बहरे अंग्रेज़ों के ईसाई नौकरों और ख़ासकर भङ्गियों को मुसलमान बनाने की कोशिश करें।

(भंगियों को मुसलमान बना कर ख्वाजा सा० केवल उन्हें भ्रष्ट ही करना चाहते हैं, क्योंकि उनके शादी विवाह के लिये तो आप अपनी इसी किताब "दाइये इस्लाम" में इन्कार कर चुके हैं फिर उनके हिंदू बने रहने में उनकी क्या हानि है?)

रेलवे कर्मचारियों को भी मुसाफ़िरों में तबलीग़ इस्लाम करनी चाहिये, वे बहुत अच्छा और प्रभावशाली काम कर सकते हैं।

याद रहे कि उपरोक्त ढँगों से काम करने में पग २ पर हिन्दू, आर्य्य और ईसाई लोग छेड़ छाड़ करेंगे, बहुधा उनकी नौकरी, पेशा और रोज़गार पर भी आबनेगी, इस कारण दावत इस्लाम का काम बहुत बचाव व होशियारी से करना चाहिये, कि जिसमें शत्रुओं की चोटों से बचे रहें और यदि कुछ हानि भी पहुंचे तो खुदा की राह पर उसे सहन करना चाहिये, अल्लाह मदद करैगा और अपने ग़ैबी खज़ाने से उन्हें रोज़ी देगा, किसी बात से डरना या कम-हिम्मत न होना चाहिये, पहिले तो मुसलमानों ने इस मैदान में अपनी और अपने बाल बच्चों की जानें तक देदी हैं, घरबार बरबाद करदिया है, मुसलमान तो हर समय परीक्षा में हैं, किसी दशा में भी उन्हें निराश न होना चाहिये, आवश्यकता है कि मुसलमान एक दूसरे की मदद करने पर तय्यार हो जावें।

(न केवल निजी नौकर किन्तु सरकारी नौकरों को भी सरकारी इमारतों तक में सरकारी ड्यूटी पर होते हुये भी मुसलेमान बनाने के लिये उभारा गया है, यदि उपरोक्त महकूमों के मुसलमान आफिसर व कर्मचारी मुसलमान बनाने का कार्य आरम्भ करदेंगे तो हिन्दुओं की रक्षा कहां और कैसे

होंगी, पाठक विचार करें। हिन्दुओं को चाहिये कि इस प्रकार से अन्याय व अत्याचार करते हुये किसी सरकारी आफिसर या कर्मचारी को पावें तो शीघ्र इसकी रिपोर्ट सरकार में करें, यदि वे चुप रहे और नीच जाति के लोगों को ये लोग मुसलमान बनाते रहे, तो कबतक हिन्दू-जाति जीवित रह सकती है स्वयं विचार करलें)

८- राजनैतिक लीडर, सम्पादक, कवि व लेखक

इन तमाम लोगों का काम दिमाग़ी व इल्मी है। ख़िलाफ़त के लोगों को यह ख़याल छोड़ देना चाहिये कि यदि वे मुसलमान बनाने का काम करेंगे तो हिन्दू नाराज़ हो जावेंगे, (पानी अब सर से ऊंचा पहुंच चुका है) १६ मार्च को दिल्ली में सभा हुई थी जिसमें हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख सब जमा थे। डाक्टर अन्सारी उस सभा के प्रधान थे, उस सभा में हकीम अजमलखां साहेब ने बड़ी नर्मी और संजीदगी से फ़रमाया था कि मैं मुसलमान हूं और मुसलमानों को मुर्तिद (हिन्दू) होने से बचाना मेरा कर्तव्य है और मैं इस काम की मदद करना मुल्की कामों के लिये हानिकारक नहीं समझता।

हकीम साहेब के इस व्याख्यान के विरुद्ध देशबन्धु साहेब ने बड़े कड़े शब्दों में भाषण दिया और सरदार गुरुबख्शसिंह सा० ने कहा कि मेरे पास १ हिन्दू साहेब बैठे हैं जो कहते हैं कि मैं डण्डे और छुरी से काम लूंगा, यानी मुसलमानों पर डण्डे और छुरी चलाऊंगा, (नितान्त झूंठ) इस पर सरदार साहेब ने बहुत अफ़सोस किया और कहा कि जब ऐसे विचार हो गये हैं तो एकता की क्या आशा हो सकती है?

सारांश मुसलमानों को तो छुरी और डण्डा चलाने की आवश्यकता नहीं है, उनको तो अपने भाइयों को हिन्दू होने से बचाना और दूसरे अछूत हिन्दुओं को मुसलमान बनाना है। उनको किसी से लड़ना झगड़ना नहीं है, हां लड़ाई ख्वाह-मख्वाह सर पर आ जावे तो उसे सहन करना और मैदान से पीछे न हटना चाहिये। (खूब ! ख्वाजा सा० ने कैसी पेशबन्दी की है, मलावार, मुल्तान, अमृतसर, अजमेर, सहारनपुर, आगरा, गोंडा और शाहजहानपुर आदि में हिन्दुओं ही ने छुरे, लाठी, तलवार और बन्दूक़ चलाई होंगी ? हिन्दुओं को जान से मार डालने, मुसलमान बनाने, उनकी दूकानों को लूटने, मन्दिरों को जलाने, मूर्तियां तोड़ने, स्त्रियों पर अत्याचार करने आदि के निन्दनीय कार्य्य भी हिन्दुओं ही ने किये होंगे ? शोक ! उपरोक्त सारे अत्याचार करके भी यही कहा जाता है कि मुसलमान तो दुधपिये बच्चे हैं वे कुछ जानते भी नहीं, हां हिन्दू उन पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहे हैं। पर उपरोक्त नगरों की मिसालें सामने हैं उनके होते हुये भी क्या आंखों में धूल डाली जा सकती है ?)

ख़िलाफ़त के लीडरों को चाहिये कि एकता बनाये रखने के साथ ही साथ दीन की रक्षा और वृद्धि का फ़र्ज भी अदा करें और मुसलमान बनाने का कार्य्य सुसंगठित रूप से जारी कर-दें जिसमें सारे हिन्दुस्तान की ख़िलाफ़त कमेटियां मुसलमान बनाने का कार्य करने लगें (अक्सर जगह ख्वाजा साहेब की सलाह के अनुसार ख़िलाफ़त कमेटियों ने कार्य्य आरम्भ कर दिया है)

ख़िलाफ़त ने मुसलमानों में एक विशेष प्रकार का संगठन उत्पन्न कर दिया है और खुदा की फ़ज़ल से अब तुर्कों की

भी सुलह हो गई इस वक्त खिलाफ़त कमेटियों को इस्लाम की रक्षा व वृद्धि का कार्य्य हाथ में लेना चाहिये। (ठीक है, इसीलिये हिन्दुओं ने खिलाफ़त फण्ड में लाखों का चन्दा दिया, उसके सभासद् बने और जेल तक गये। हिन्दू लोग अच्छे उल्लू बने। अब 'लाला की जूती उन्हीं के सर' वाली मसल इन पर खूब चरितार्थ होती है)

अमॅइत उलॅमा के अक्सर लोगों का तो इधर ध्यान आकर्षित हो गया है, जो शेष हैं उन्हें भी इधर शीघ्र ध्यान देना चाहिये।

जो मुसलमान कांग्रेस के लीडर या काम करने वाले हैं उनको इसी आंदोलन द्वारा स्वराज्य प्राप्त करना चाहि-ये। यदि सब अछूत जातियें मुसलमान हो जावैं तो उनका पक्ष हिन्दुओं के बराबर हो जावेगा और स्वराज्य प्राप्त होने पर ये हिन्दुओं के गले में चक्की का पाट न रहेंगे, जिनको उठाकर हिन्दुओं को चलना पड़े, वरन् वे स्वयं अपने पैर खड़े हो सकेंगे। हिन्दू २२ करोड़ हैं, मुसलमान केवल ८ करोड़ हैं यदि ६ करोड़ अछूत मुसलमान हो जावैं तो फिर उनकी तादाद भी १४ करोड़ हो जावे और फिर उनमें इतनी निर्बलता न रहे जो वे हिन्दुओं के लिये वारे खातिर हों। इस वास्ते कांग्रेस के मुसलमान लीडरों को सब से अधिक अछूत हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का प्रयत्न करना चाहिये (इन दिनों जगह २ जो झगड़े हुये उनमें मुसलमानों की निर्बलता खूब देखने में आई, जब १४ करोड़ हो जावेंगे तब संभव है इसी प्रकार की और निर्बलता आ जावै। ख्वाजा सा० ६ करोड़ अछूतों पर ही अधिक क्यों ज़ोर देते हैं २२ करोड़ के २२ करोड़ सभी को क्यों लेने का प्रयत्न नहीं करते और फिर

तब तो मुसलमानी स्वराज्य निश्चय ही प्राप्त हो जावेगा) इनका काम यही है कि अपने २ इलाक़ों की कांग्रेस कमेटियों द्वारा उन जातियों की रिपोर्ट तैयार करें जहां इस्लाम की वृद्धि की आवश्यकता है ताकि इस्लाम के प्रचारक वहां काम कर सकें। रिपोर्ट के अतिरिक्त उनको यह भी चाहिये कि हिन्दुओं में मुसलमानों के खिलाफ़ जोश या ग़लत-फ़हमी न पैदा होने दें (यानी उन्हें बुद्धू बनाकर, जैसे अजमेर के २-४ हिन्दू कांग्रेस कार्य्यकर्त्ताओं को बनाया गया है, अपना उल्लू सीधा करें)

मुसलिम समाचार पत्रों और मासिकपत्रों का फ़र्ज़ है कि लगातार ऐसे लेख लिखें कि जिनसे इस्लामी प्रचारकों को माली व अमली सहायता मिले और क़ौम में जोश मुसलमान बनाने के लिए पैदा हो।

शुद्धि न लिखो इर्तदाद लिखो—यह बात सब से अधिक ध्यान देने की है कि मुसलिम समाचारपत्रों को आर्य्यों के शब्द "शुद्धि" को इस्तेमाल न करना चाहिये उसके बदले इर्तदाद व मुर्तिद लिखना ठीक है, क्योंकि शुद्धि के अर्थ 'पाक' होने के हैं, अतएव यदि मुर्तिद होने को मुसलमान अपनी क़लम या ज़बान से पाक होना लिखेंगे तो बहुत बड़ा पाप होगा, हां यदि अशुद्धि लिखा जावे तो ठीक है यानी शुद्धि के पहिले अलिफ़ लगा दिया जावे।

मुसलिम प्रेसों के लिये यह बात बहुत ध्यान देने की है कि मौजूदा जोश ठण्ढा न पड़ जावे, इसको सदा स्थिर रखने और लीडरों को जगाते रहने की आवश्यकता है।

मुसलिम कवियों को भी इधर ध्यान देना चाहिये, उनको

सरल शब्दों में ऐसी कविता करनी चाहिये जिसमें मुसलमानी अक़ीदे नमाज़ रोज़ा के बयान हों, अभी जितनी इस्लामी कवितायें मौजूद हैं उन्हें फिर से तरतीब देकर और पूरी करके छापना चाहिये।

इस्लामी स्वांग—हिन्दुओं में ड्रामा के ढंग पर स्वांग का दस्तूर है, स्वांगों में हिन्दुओं की लड़ाई के हाल और अन्य हिन्दू सभ्यता की बातें किस्सों के ढंग पर दिखाये जाते हैं, देहात में इन स्वांगों का बड़ा शौक़ है, बाज़ार में मलखान की लड़ाई के नाम से एक पुस्तक बिकती है, इसको मुसलिम कवियों के पास पहुंचाना चाहिये ताकि वे देखें कि जिन मलखाना राजपूतों को मुर्तिद (हिन्दू) बनाने का प्रयत्न किया जारहा है उनके ख़यालात व हालात क्या हैं और उन्हीं ख़यालात के आधार पर मुसलमानी बहादुरी के क़िस्से स्वांग के ढङ्ग पर लिखने चाहियें। स्वांग करने वाले आमतौर से मुसलमान हैं। मेरे इलाक़े में नसीरा नाम का एक विख्यात स्वांगिया है जिसके गाने और नाच को हज़ारों हिंदू व मुसलमान बड़े शौक़ से देखते व सुनते हैं। मैंने उससे इस्लामी स्वांग करने को कहा, तो उसने उत्तर दिया कि यदि हमको इस्लामी स्वांग लिख दिये जावें तो आयन्दा हम इस्लामी स्वांग ही किया करेंगे और हिन्दू स्वांग छोड़ देंगे। उसने यह भी कहा कि स्वांग करने वाले अधिकतर मुसलमान हैं और वे सहर्ष क़ौमी ख़िदमत करने को तय्यार हो जावेंगे (इसके लिए हिन्दुओं को क्या करना चाहिये, सब से सरल उपाय यही है कि उन्हें बुलाना बंद करदें)

सम्भव है आलिम लोग इस प्रस्ताव के विरुद्ध हों किन्तु मैं प्रार्थना उन लोगों से करता हूं जो गाने बजाने और स्वांग

को नाजायज़ नहीं समझते और मैं भी उन्हीं में हूं। (क्यों न हो इस्लाम तो फैलता है)

मुसलमान पुस्तकें लिखनेवालों का भी फ़र्ज़ है कि सब काम छोड़कर बस इसी ओर लग जावें। मुसलमान बनाने के तरीक़े किताबों से छानछून कर प्रकाशित करें, यही नहीं वरन् मुसलमानों की बहादुरी के हालात भी तय्यार करने चाहियें, जिन्हें सुनने से हिन्दू राजपूतों पर प्रभाव पड़े। मुसलमानों के भ्रातृभाव की मिसालें भी लिखना चाहिये जो अछूतों को सुनानी चाहियें, इस्लाम की रक्षा के लिये उनके अक़ीदों के छोटे २ ट्रैक्ट लिखने चाहियें जो मुसलमानों में खूब बांटे जावें। ग़रज़ कि समय आगया है कि वे अपने दिल व दिमाग़ और इल्म को इस तरफ़ लगावें और साबित करदें कि मुसलमानों का हरएक गिरोह इस्लाम के प्रचार में लग गया है और कलमा "ला इलहइल्लिला" की स्टीम से जो मेशीन चल रही है उसके सब पुर्ज़े पूरी तरह से अपने २ काम में लगे हुये हैं।

९—डाक्टर व हकीम

स्वतन्त्र हकीम व डाक्टर मुसलमान बनाने की ओर अपना ध्यान दें तो उनके प्रभाव से बहुत काम होसकता है। देशी हकीमों का आप लोगों पर बहुत प्रभाव होता है। हिन्दू लोग भी हकीमों से इलाज कराते हैं, यदि उनके अन्दर इस्लाम की वृद्धि का जोश हो तो दीन की सेवा बहुत कर सकते हैं।

१०—गाने वाले

क़व्वाल हर जगह मौजूद हैं, क़व्वाली में हर प्रकार के हिन्दू लोग शामिल होते हैं। यदि क़व्वाल लोग इस्लामी

तौहीद की ग़ज़लें याद करें और इस्लाम की वृद्धि के ख़याल से उन्हें गायें तो अल्ला ताला असर पैदा करेगा।

हर प्रकार के गाने वाले व बाजे बजाने वालों को तय्यार करना चाहिये कि हर मजलिस में १, २ चीज़ें इस्लामी शान की ज़रूर गावें। गाने वाली रण्डियों को भी ऐसी ग़ज़लें याद कराई जावें।

सम्भव है कि आलिम लोग इसमें आपत्ति डालें, इसलिये अच्छे गले के मुसलमान लोगों की टोलियां बनानी चाहियें, जो जगह २ इस प्रकार की ग़ज़लें गाते फिरें, हिन्दुस्तान में गाने का व्याख्यान के मुक़ाबले में अधिक प्रभाव पड़ता है, गाने वालों को इस आन्दोलन में अवश्य शामिल करना चाहिये जो लोग इसे पसन्द न करें उनके क़ायल करने के लिये मैं हुज्जत नहीं करता। मेरा कहना केवल उन लोगों से है जो इसको ठीक समझते हैं।

११—भीख मांगने वाले

मुसलमानों में भिखारी बहुत अधिक हैं। क़ौम उनको ठीक करना चाहती है पर वे ठीक तो जब होना होगा हो जावेंगे। इस समय तो उन को काम का आदमी बनाना चाहिये और वह यह है कि उनको इस्लाम की वृद्धि की आवश्यकता बताई जावे और उनको कहा जावे कि वे इस प्रकार से कार्य करें।

जो फ़क़ीर भिखारी का काम करते हैं उनको ऐसी २ सदायें (आवाज़ें) सिखाई जावें, जिनके कहने से इस्लाम की खूबी ज़ाहिर हो। जो गाकर भीख मांगते हैं उनको भी इस प्रकार के गाने याद कराये जावें, कि जिनसे इस्लाम की खूबियां प्रगट हों।

अन्धे भीख मांगने वालों का गला अच्छा होता है, उनको विशेष रीति से इस प्रकार की ग़ज़लें याद कराई जावें जिनसे जनता पर प्रभाव पड़े।

मूंडचिरे फ़क़ीर वे होते हैं जो अपने शरीर में घाव लगाकर भीख मांगते हैं, उनसे भी काम लेना चाहिये, चूड़ियां बजाने वाले फ़क़ीर नज़ीर अकबराबादी की कविता पढ़ते हैं, अब उनको इस्लामी कविता याद कराई जावें। जो गदागर फ़र्ज़ी भिखारी बनजाते हैं, वे ख़बर लाने का काम अच्छा कर सकते हैं और भीख मांगने वाली स्त्रियां भी घरों में जाकर ख़बरें लाने का काम बहुत अच्छा कर सकती हैं।

१२—ख़बर-रसानों का काम

इनके बारे में पहिले ब्यौरेवार लिख दिया गया है अब फिर लिखने की आवश्यकता नहीं। हां इतना लिखना ज़रूरी है कि यदि ख़बर लाने का महक्मा क़ायम हो गया तो केन्द्र का बल बहुत बढ़ जावेगा और यह महक्मा केवल इस्लाम की वृद्धि का ही काम न करेगा वरन् प्रत्येक इस्लामी आन्दोलन को इससे लाभ पहुंचेगा। मुसलमानों को इसमें ढील न करना चाहिये। ऐसा न हो कि मुसलमान तो सोचते ही रहें और दुश्मन लोग इसको करके दिखादें।

क़ानूनपेशा के लोग

गिरोहों के विभाग करते समय वकीलों का ज़िकर रह गया; यह गिरोह क़ौम का सब से अधिक ज़रूरी है। ख़िलाफ़त व कांग्रेस में इस जमाअत ने सब से अधिक काम किया, इस गिरोह को जनता से रात दिन मिलने का अवसर मिलता

है, इनको भी इस्लाम की वृद्धि का काम करना चाहिये, बल्कि इस गिरोह को तो रक्षा व प्रचार के सारे प्रबन्ध अपने हाथ में लेना चाहिये।

काम का विभाग

काम बांटते समय इस बात का ध्यान रक्खा जावे कि एक जमाअत (गिरोह) के हाथ में जो काम या अधिकार हों उसमें दूसरे गिरोह के लोग हस्तक्षेप न करें।

मुसलमानों के कामों में सदा यह त्रुटि रहती है कि वे काम को बांटना नहीं जानते। एक ही आदमी के हाथ में कई कई अधिकार दे देते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि आपस में एक दूसरे से खिंचा खिंची होजाती है।

काम बांटते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि उस गिरोह के प्रबन्धक तजुर्बेकार और ईमानदार हों। बड़े २ आदमियों को उनकी ख्याति के कारण ही प्रबन्धक न बना देना चाहिये, इससे बहुधा बड़ी हानि होती है। प्रबन्धक वे होने चाहियें जिनके पास उस काम के अतिरिक्त घर बाहर कहीं का काम न हो। चाहे वे विख्यात हों या न हों।

अमले के प्रबन्धकों को छोटे २ मक्तबों (पाठशालाओं) का खोलना बहुत ज़रूरी है जहां नौमुसलिमों के बालकों का इस्लाम की ज़रूरी २ बातें बताई जावें।

दूसरी ज़रूरी बात यह है कि व्याख्यान देने वालों, प्रबन्धकों और शास्त्रार्थ करने वालों की अलग दो जमाअतें नियत की जावें एक ही से दो काम लेने उचित नहीं वरन् अधिक हानि होती है।

इस आंदोलन में सब से अधिक इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि शिया, सुन्नी, सूफ़ी और वहाबियों के आपस के मतभेद की बातों को इसमें न लाया जावे। इसका उपाय यही है कि हर फ़िरक़े के कारकुन अलग २ नियत किये जावें। एक दूसरे से मिलना बहुत हानिकारक होगा।

गाने की एक शाखा ज़रूर होनी चाहिये, आलिमों को इस में आपत्ति हो तो मशायख की ओर से अलग यह शाखा स्थापित करना चाहिये और इसकी सूचना केन्द्र को दी जावे ताकि उन्हें सब बातों की सूचना मिलती रहे।

किन २ जातियों व स्थानों में काम किया जावे

किन २ जातियों और स्थानों मे काम किया जावै इसका निश्चय कार्य्य करने पर हो सकेगा। मगर मेरे ख़याल में सब से अधिक आवश्यकता नीच जातियों में काम करने की है, विशेषकर चमार व भंगियों में पूरे बल से काम करना चाहिये, बहुतसे चमार ईसाई हो गये हैं, हम उनको मुसलमान बना सकते हैं या जो ईसाई नहीं हुये उनको मुसलमान बनाने में सरलता होगी। गोन्ड, भील, कंजर और घूमनेवाली जातियों को इस्लाम का सन्देशा सुनाना चाहिये।

रियासत हैदराबाद दक्खिन में बहुत बड़े पैमाने मे काम करना चाहिये। वहां आसानी से लाखों आदमी मुसलमान हो सकते हैं (सचाई फूटकर निकल आई। मुसलमान राजा होने से बेचारे ग़रीबों का धर्म भ्रष्ट करने में अवश्य आपको आसानी है)। मलाबार और मद्रास के इलाक़ों में भी ध्यान देना चाहिये।

सिन्ध, गुजरात, काठियावाड़ ऐसे मैदान हैं कि यहां हर-एक आंदोलन बहुत जल्द फलने फूलने लगता है। इन जगहों में पीरों और आग़ाखानी मिशन को शामिल करना ज़रूरी है।

बंगाल के अनगणित अनपढ़ मुसलमानों को पक्का करना ज़रूरी है नहीं तो बहुत भय है।

ब्रह्मा में बड़ा मैदान है। वहां की स्त्रियों से शादी करने से इस्लाम की खूब वृद्धि हो सकती है, ब्रह्मा में रोज़गार भी बहुत है, बेकार मुसलमान वहां जावें रोज़ी भी कमावें और शादियां भी करके स्त्रियों का मुसलमान बनावें, ब्राह्मी लोगों में तास्सुब नहीं होता, वहां शादियों के द्वारा इस्लाम फैलाना बहुत सरल है।

(इतना लिखकर ख़्वाजा सा० ने एक पंक्ति में बहुतसी बिन्दियें देकर छोड़ दिया है। इसका तात्पर्य या तो इत्यादि २ का होता है या यह हुआ करता है कि लेखक को कुछ और लिखना है किन्तु किसी कारण या संकोच वश नहीं लिखता और पाठकों पर छोड़ देता है, ज्ञात नहीं कि ख़्वाजा सा० ने किस अभिप्राय से ऐसा किया है। यहां पर इत्यादि की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, सम्भव है इससे भी अधिक महत्व की कोई बात मुसलमान बनाने की लिखना चाहते हों, जैसा कि सुना जाता है कि प्रथम संस्करण में लिखा था, किन्तु संकोच-वश उसे न लिखकर बिन्दियें दे दी हैं। खैर उनका अभिप्राय कुछ हो, पाठक भी ख़्वाजा सा० के बताये हुये हथकण्डों को पढ़कर अपनी इच्छानुसार इस जगह बिन्दियें देने का अभि-प्राय निकाल लें)

हिन्दू मुसलमान देशी रियासतों में, जहां मज़हब बदलने की क़ानूनी मनाही न हो, प्रचार का काम अच्छी तरह हो सकता है।

सारांश प्रत्येक शहर, क़सबा और गांव में व प्रत्येक कारखाने में बल्कि प्रत्येक घर में मुसलमानी धर्मप्रचार व मुसलमान बनाने के अवसर प्राप्त हैं। मुसलमानों को उचित है कि आलिमों पर इस काम को न छोड़दें किन्तु ध्यान रक्खें कि उनका भी कर्त्तव्य है और वे भी यह काम कर सकते हैं।

न कहीं दूर जाने की आवश्यकता है और न चन्दा जमा करने की, न सभा क़ायम करने की ज़रूरत है और न प्रचारक को मौलवी बनने और बड़ी योग्यता प्राप्त करने की, इस्लाम का प्रचार तो बहुत सरल है, प्रत्येक मनुष्य उसे कर सकता है यदि वह करना चाहे। केवल बकवास करने या एतराज़ जड़ने की आदत न होना चाहिये। जैसा कि आजकल बाज़ मुसलमान लोग सिर्फ़ ताना देने और दूसरों की बुराई करने के सिवा और कुछ नहीं करते, केवल यही कहते हैं कि मौलवियों ने यह त्रुटि की, मशायख़ यह बात भूल गये, और लीडर कुछ ध्यान नहीं देते। कोई इनसे पूछे कि तुम ख़ुद क्या करते हो, केवल चन्दा देदेने से कर्त्तव्य पूरा नहीं होता, ज़बान से भी काम करो, क़दम से भी काम करो और समय भी इस कार-ख़ैर में लगाओ।

उपरोक्त सारी पुस्तक के लिखने से मेरा यह अभिप्राय है कि मुसलमानों के दिल, दिमाग़ और ज़ेहन को सोचने और काम के ढंग निश्चय करने का एक रास्ता मालूम हो जावे और हर गिरोह में मुसलमानी धर्म-प्रचार और मुसलमान बनाने का शौक़ पैदा हो जावे।

मनुष्य का काम केवल प्रयत्न करने का है उसका पूरा करना खुदा के हाथ है, वही नीयत और इरादे का देखने वाला और सीधे रास्ते पर चलाने वाला है और उसी से यह आखरी दुआ है कि इलाही सीधा रास्ता दिखा जिन पर तेरा इनाम है उनके रास्ते पर चला और जिनसे तू नाराज़ है उनके रास्ते से बचा।

(उपरोक्त वाक्य लिखकर ख्वाज़ा हसन निज़ामी सा० ने अपनी पुस्तक समाप्त की है। आगे उन्होंने जो लिखा है उससे ज्ञात होता है कि प्रथम संस्करण विना मूल्य ही बांटा गया है और यह दूसरा संस्करण अफ़रीका की प्रबन्धकर्त्तृ-सभा की प्रेरणा पर छपा है। दफ़्तर का पता लिखा है-हलक़ा मशायख़ बुकडिपो दिल्ली। और टाइटिल की पीठ पर भी "मदर्सा दाइयान इस्लाम" के संबन्ध में कुछ लिखा गया है। हलक़ा मशायख़, मदर्सा दाइयान इस्लाम तथा १, २ मास के भीतर भीतर ही भारतवर्ष के अनेक नगरों में मुसलमानों की ओर से एक ही ढंग के झगड़ों से साधारण से साधारण मनुष्य भी यह नतीजा निकाले विना नहीं रह सकता कि मुसलमानों ने, जो कुछ ख़्वाजा सा० ने लिखा है, उस पर पूरा पूरा ध्यान दिया है, मेरे एक मित्र ने कहा कि मेरी दूकान पर अक्सर फ़क़ीर इन दिनों आये जो वने हुये ज्ञात हुये और जो हमारी आपस की बातें बहुत ध्यानपूर्वक सुनने का प्रयत्न करते थे, यह सब क्या है? भूपाल और हैदराबाद में जिस ज़ोर के साथ मुसलमान बनाने का कार्य्य इन दिनों हो रहा है उसको देखकर कौन आदमी है जो उनके संगठन से इन्कार कर सकता है, इस किताब में जो जो तरकीबें लिखी गई हैं उनमें से लगभग सभी पर मुसलमान लोगों ने ध्यान

दिया है, कार्य्य भी होने लगा प्रतीत होता है। अब प्रश्न यह होता है कि हिन्दुओं को क्या करना चाहिये, रात दिन इन का और उनका चोली दामन कासा साथ है, एक तो हिन्दू वैसे ही बहुत सरल-हृदय के हैं, दूसरे उनके अन्दर छल व कपट नहीं है, तीसरे अक्सर लोग इनका बहिष्कार करना चाहते भी हैं तो इनका धर्म, इनकी सरलता तथा इनकी निर्बलता इन्हें करने नहीं देती। कोई कहता है कि इनसे फल व तरकारी न ख़रीदो, कोई कहता है इनसे दूध मत लो, कोई कुछ कहता है और कोई कुछ, पर जो मनुष्य उपरोक्त पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ेगा उसे ज्ञात होजा-यगा कि इन छोटी मोटी बातों से इतने भारी २ षड्यन्त्रों का मुक़ाबला करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है)

(जब मैं इस पुस्तक की बातों को हिन्दी में लिखने लगा तो कई लोगों ने मुझ से कहा कि उनकी प्रत्येक तरकीब का खण्डन भी साथ के साथ लिखते जाना, पर जब मैं सारी किताब पढ़कर लिखने बैठा तो हैरान होगया कि क्या खण्डन लिखूं। हिन्दुओं में इतना बल नहीं कि वे भी उसी प्रकार से उतने महकमे बनावें और उनके द्वारा अछूतों तथा नीच जाति के लोगों को मुसलमान होने से बचावें, अपनी रक्षा करें और नौमुसलिमों को शुद्ध करें। ख़्वाजा साहब कहते हैं कि ६, ७ करोड़ अछूत हमारी ओर आजावें तो हम और हिन्दू बराबर बराबर होजावें और फिर आपस में एक दूसरे की बराबरी होजावे और स्वराज्य मिलजाने पर हम लोग हिन्दुओं को भार न हों, पर यदि हिन्दू यहां के सब नौमुसलिमों और ईसाइयों को शुद्ध करलें या सारे मुसलमान व ईसाई ठीक रास्ते पर

आकर अपने बुजुर्गों का धर्म स्वीकार करके एक ईश्वर की शरण लें और उसके बताये हुये एक सीधे वैदिक मार्ग पर चलना आरम्भ करदें तो यह मेरा दावा है कि स्वराज्य मिलने में एक क्षण की भी देर न लगेगी। अतएव ऐ मुसलमान और ईसाई भाइयो ! यदि आप निश्चय स्वराज्य लेना चाहते हैं तो मेरे उपरोक्त निवेदन पर ध्यान दीजिये। २२ करोड़ हिन्दुओं को ७ करोड़ मुसलमानों या ५० लाख ईसाइयों के साथ मिलने में बहुत विलम्ब लगेगा और कठिनता भी बहुत होगी, किन्तु ७ करोड़ मुसलमानों और ५० लाख ईसाइयों को, जिनमें से अधिकतर हमारे हिन्दू भाई ही हैं, २२ करोड़ के साथ मिलने में बहुत कम समय लगेगा और यह काम बड़ी सरलता से हो भी सकता है, क्योंकि एक तो वे हमारे ही हिन्दू भाइयों के वंश के हैं दूसरे वे इसी देश में पैदा हुये, यहां के ही जल, वायु तथा अन्न से उनके शरीर बने, तीसरे अब हिन्दुओं ने भी उनसे घृणा करना छोड़ दिया और जहां किसी समय उनको छूकर नहाते थे, वहां अब उन्हें अपनी बिरादरी में मिला रहे हैं। अतएव उनको अपने २२ करोड़ हिन्दू भाइयों से मिलने में किञ्चिन्मात्र भी कठिनता न होगी, हिन्दू सहर्ष उन्हें अब अपने में मिलाने को तय्यार हैं, यदि सच्चे स्वराज्य-भक्त मुसलमान व ईसाई इस गुरुमन्त्र को समझ कर इस सुअवसर से लाभ उठाना चाहें, पर मैं जानता हूं कि स्वार्थ और कट्टरपना ऐसा करने न देगा। इसलिये ख़्वाजा हसन निज़ामी साहब की बताई तरकीबों पर हिन्दुओं को उठते, बैठते, चलते, फिरते, खाते, पहिनते हरसमय ध्यान रखना चाहिये, नहीं मालूम कौन आदमी उनका जासूस हमारे पीछे होवे, नहीं मालूम कौन षड्यंत्र वे रच रहे हों,

उनके महक्मे जासूसी क़ायम होजाने पर क्या हमारा मुसलमान सिपाही, कोचवान, दर्ज़ी, दूध वाला, फल व तरकारी देजाने वाला, घर में चूड़ी पहनाने वाला, फेरी वाला या भीख मांगने वाला हमारे यहां का नमक खाकर हमारे साथ विश्वासघात करेगा या जासूसी का काम करेगा और हमारे यहां के भेद अपने महक्मे जासूसी में देगा ? जिन्हें इस बात पर विश्वास न होता हो उनको अजमेर के २३ जुलाई सन् २३ के हत्याकाण्ड की बातें हिन्दू घायलों से पूछना चाहिये। दश २ पन्द्रह २ वर्ष के पुराने काम करने वाले पल्लेदारों, रंगरेजों, घोसियों और चूड़ीवालों ने अपने परिचित, नहीं २, मित्र और मालिक हिन्दुओं की जो कुछ दुर्गति की उसके लिखने के लिये लेखनी में शक्ति नहीं है)

(ख़्वाजा साहब की तरकीबों पर ध्यान रखते हुए यदि निम्नलिखित बातों पर अमल किया जावे तो अधिक लाभ होगा, क्योंकि मैं अपने हिन्दू भाइयों को उनके हथकन्डों का तुर्की बतुर्की जवाब देने की सलाह नहीं देता और न अपने मित्र के आदेशानुसार उनकी प्रत्येक चाल का प्रतिकार ही लिखना चाहता हूं। उनके लिखने से हिन्दुओं के दिलों में मुसलमानों के प्रति घृणा उत्पन्न होने की सम्भावना है, जो अपना उद्देश नहीं है। नहीं तो कुल पुस्तक का उत्तर केवल दो शब्दों में यह हो सकता है कि ऐसे लोगों से अपना किसी प्रकार का भी संबन्ध न रक्खा जावे, और जिस प्रकार से मुसलमान लोग हिन्दुओं के पेशों की दूकान खोल २ कर उनका बहिष्कार कररहे हैं उसी प्रकार से हिन्दू लोग भी उनका एकदम बहिष्कार करदें, पर जैसा कि मैं ऊपर लिख चुका हूं कि हिन्दू मुसलमानों का चोली दामन का सा साथ होगया है, अब इस प्रकार का

बहिष्कार एक तो कठिन भी है, दूसरे इससे एक दूसरे के प्रति घृणा अधिक उत्पन्न होगी इसलिये हिन्दुओं को अपनी रक्षा ही करना बहुत है)

(हिन्दू संगठन की आवश्यकता को समस्त हिन्दू जनता ने महसूस किया है और अक्सर जगह उद्योग भी हो रहा है, इस समय आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दू सभायें नगर २ और ग्राम २ में स्थापित हो जावें और गांवों की सभायें तहसील, तहसीलों की ज़िला, ज़िलों की प्रांत और प्रांत की भारतवर्षीय हिन्दू महासभा के आधीन हों और जिस प्रकार से अंग्रेज़ी सर्कार का प्रबन्ध सुसंगठित रूप से चल रहा है उसी प्रकार से हिन्दू सभाओं को चलाया जावे और समस्त हिन्दू-सभायें निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान रक्खें—

१—कोई हिन्दू अनाथ बिना सहायता के आवारा तो नहीं फिर रहा है, यदि हो तो उसे समीप के किसी अनाथालय में भेज देना चाहिये।

२—कोई बेवा स्त्री बिना किसी सहारे के तो नहीं है, यदि हो तो उसकी इच्छानुसार उसका उचित प्रबन्ध करना चाहिये।

३—कोई स्त्री या पुरुष अपने घर से लड़ाई करके भागने वाला तो नहीं है, यदि हो तो सभा के कार्य्यकर्त्ता उसे समझा बुझाकर फ़ैसला करा दें।

४—किसी हिन्दू मर्द का सम्बन्ध किसी मुसलमान स्त्री से तो नहीं है, यदि हो तो छुटाने का प्रयत्न करना चाहिये और न छूटने पर हिन्दू शास्त्र के अनुसार वह संबन्ध दृढ़ करा देना चाहिये, यानी उस स्त्री को शुद्ध करके उस पुरुष से उसका विवाह करा देना चाहिये।

५—किसी हिन्दू स्त्री का संबन्ध किसी मुसलमान पुरुष से तो नहीं है, यदि हो तो उसके छुटाने का प्रयत्न करना चाहिये, और उस स्त्री का पुनर्विवाह करदेना चाहिये, यदि वह स्त्री उसी पुरुष के साथ राज़ी हो तो उसे शुद्ध करने का प्रयत्न करना चाहिये।

६—कोई पुस्तक या विज्ञापन हिन्दुओं के विरुद्ध में तो नहीं निकाला गया, यदि निकाला गया हो तो जिस सभा या मनुष्य को प्राप्त हो वह महासभा को भेज दे और महासभा उसके खण्डन का प्रबन्ध करे।

७—कोई लड़का या लड़की मुसलमानों के मदरसों या स्कूलों में तो नहीं पढ़ते यदि पढ़ते हों तो उनको वहां से हटा कर हिन्दू पाठशालाओं में भर्ती कराना चाहिये, जिस गांव में पाठशाला न हों वहां खोलने का प्रबन्ध करना चाहिये।

८—किसी मुसलमान स्त्री अथवा मर्द को, चाहे वह किसी भी चीज़ के बेचने का कार्य्य करता हो, हिन्दू स्त्रियों में न जाने देना चाहिये।

९—किसी फ़क़ीर या मुल्ला के पास किसी स्त्री या बच्चे को झाड़ा फूंकी वा औलाद मांगने के वास्ते कदापि नहीं जाने देना चाहिये, किसी मनुष्य को सिद्ध समझ कर घर में नहीं आने देना चाहिये, मुसलमान लोग हिन्दू पण्डितों व साधुओं के स्वाङ्ग भरकर लोगों को भ्रष्ट करते फिरते हैं, इसलिये बिना जाने किसी को घर में नहीं घुसने देना चाहिये। मुसलमान स्त्री पुरुषों को कैसा ही काम क्यों न हो स्त्रियों में कदापि नहीं जाने देना चाहिये।

१०—जो हिन्दू स्त्रिय बाहर जाती हैं उनको इकल्ली कभी नहीं जाने देना चाहिये, झुंड में जावें और बाहर एक मर्द उनके

साथ हो, जा हिन्दू स्त्रियें व लड़के मज़दूरी करने मुसलमान मिस्तरियों व छोटे कारखाने वालों के यहां जाते हैं उन्हें वहां नहीं जाने देना चाहिये, क्योंकि प्रायः उनके साथ व्यभिचार किया जाता है और वे ज़बरन मुसलमान बना लिये जाते हैं।

११-प्रत्येक मन्दिर में व्यायामशाला व अखाड़ा खोलना चाहिये वहां महावीरजी की तसवीर होना चाहिये और १ आदमी लाठी सिखाने वाला भी रहना चाहिये, ग्राम २ में सेवकमण्डल बनाना चाहिये और मन्दिरों में दवाइयों का भी प्रबन्ध करना चाहिये। प्रत्येक ग्राम में १५ से २० वर्ष के जितने युवक हों उन्हें कसरत करना, लाठी चलाना आदि सीखाने का प्रबन्ध करना चाहिये)

(उपरोक्त बातों के अतिरिक्त प्रत्येक हिन्दू सभा को अपने आधीन ग्रामों की निम्नप्रकार की सूची अपने पास रखनी चाहिये—

१—प्रत्येक ग्राम में किस २ जाति के कितने घर हैं।

२—कितने अनाथ व लावारिस बच्चे हैं।

३—कितनी बेवायें हैं और उसमें से कितनी बे-सहारे हैं।

४—कौन २ सा पेसा पेशा मुसलमान करते हैं जिसके कारण हिन्दुओं का उनसे संसर्ग रहता है।

५—कितने मंदिर हैं।

६—कितने मदरसे या पाठशालायें हैं।

७—कितने लड़के या लड़कियां पढ़ते हैं, इत्यादि)।

इति।

क्या ख़तरे के घन्टे को नष्ट करदेना चाहिये ?

श्री राजगोपालाचार्य तथा उन्हीं के विचार वाले कुछ सज्जनों का अब भी यही ख्याल है कि मुसलमान चाहे जितना अत्याचार हिन्दुओं पर करें, उन्हें कुछ शिकायत तक न करना चाहिये, उनका कहना है कि क्या हर्ज है यदि १ करोड़ हिन्दू मुसलमान बन जावें, हमारी तादाद फिर भी २१ करोड़ रहेगी, पर जिन्होंने इस विषय पर कुछ भी मनन किया है उनका यह निश्चय है कि उपरोक्त सज्जनों के विचारों से सहमत होजाने पर न केवल १ करोड़ किन्तु शीघ्र ही ७ करोड़ और फिर शेष हिन्दू जाति का नाश अनिवार्य है।

ख़्वाजा हसन निज़ामी 'दाइये इस्लाम' नामी पुस्तक का मुसलमानों में छुपे २ प्रचार करके उन्हें शीघ्र १ करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की बहुतसी तरक़ीबें बता रहे हैं। उन तरक़ीबों पर अमल भी शुरू होगया है पर यदि उन तरक़ीबों से हिन्दुओं को सचेत किया जाता है तो ऐसी पुस्तक को प्रताप कानपुर नष्ट करदेने की सलाह देता है। ख़ैर यह पुस्तक ऐसे विचार वालों के लिये नहीं है, यह पुस्तक केवल उन के लिये है जो हिन्दू जाति के एक २ बच्चे की रक्षा करना अपना परम कर्तव्य समझता है।

पुस्तक की उपयोगिता का परिचय इसी से हो सकता है कि केवल ३ दिन में उसका प्रथम संस्करण २००० का निकल गया, १ पुस्तक भी अपने यहां न रहगई और कई हज़ार के

आर्डर इस समय हाथ में हैं। कुछ का ख्याल चाहे जो हो पर मेरा विचार तो एक २ हिन्दू बच्चे तक को ख्वाजा साहेब के हथकण्डों से सचेत कर देने का है। इसी अभिप्राय से दूसरा संस्करण ५००० का निकाल कर ≡) के बदले =) में देना निश्चय किया है। गुजराती में १ सज्जन ने ५००० छपाकर बांटने के लिये आज्ञा मांगी है। क्या ही अच्छा हो कि उर्दू, बंगला व मद्रासी और विशेषकर ब्राह्मी भाषा में भी अनुवाद होजावें, क्योंकि ब्राह्मी लोगों को मुसलमान बनाने और उनकी देवियों को अपहरण करने के लिये विशेष रूप से बल दिया गया है।

इस संस्करण में बहुत कुछ संशोधन किया गया है और जो २ त्रुटियां प्रथम संस्करण में ज्ञात हुई उन के दूर करने का भी प्रयत्न किया गया है। आशा है कि पहिले की नाईं इस संस्करण को भी जनता अपना कर हमारे उत्साह को बढ़ावेगी।

इतना अल्प मूल्य केवल इसलिये करदिया गया है कि जिसमें दानी महाशय सौ २ पांच २ सौ लेकर ग़रीब हिन्दू जनता में वितरण कर सकें।

निवेदक—

प्रबन्धकर्त्ता

आर्य्य-साहित्य-मण्डल,

अजमेर.

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

भयानक षड्यन्त्र

आगाखानियों की धोखेबाज़ी और चालाकी का

प्रत्यक्ष नमूना.

मूल्य केवल २ आना.

प्रथम संस्करण की भूमिका

जा हसन निज़ामी दिल्ली ने एक करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिये जो जो हथकंडे अपनी पुस्तक "दाइये इस्लाम" में बताये थे, वे सब मैं "खतरे का घन्टा" नामक पुस्तक में बतला चुका हूँ। इसी सम्बन्ध में श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती द्वारा उर्दू में प्रकाशित "दाइये-इस्लाम या तबाहिये-इस्लाम" नामी पुस्तक देखने से पता लगा कि ख्वाजा साहिब ने तो हाथ धोकर हिन्दू जाति के नाश करने का बीड़ा उठा लिया है। पुस्तकों के अतिरिक्त जहाँ आप एक ओर ट्रेक्टों, नोटिसों तथा पाक्षिक व मासिक पत्रिकाओं द्वारा हिन्दुओं को हड़प करने के लिये अपने मुसलमान भाइयों को उकसा रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर मक्तबों (पाठशालाओं), दवा बेचने वालों, फेरी करने वालों तथा फकीरों और प्रचारकों द्वारा उन्हें बेधर्म करने की घातें सोच रहे हैं। आज मुझे बड़ी कठिनाई से साढ़े तीन रुपये में उनकी एक २४० पृष्ठ की पुस्तक हाथ लगी। उसका नाम व विपय तो पाठकगण आगे पढ़ेंगे ही, यहाँ पर पुस्तक के टाइटिल की ३, ४ पंक्तियाँ लिख देने मात्र से पता लग जावेगा कि इस पुस्तक का 'भयानक पड्यन्त्र" नाम कितना उपयुक्त है। आप किताब का नाम देकर लिखते हैं कि इस्लाम के आरम्भ काल से सन् हिजारी १३३८ तक "फ़ातीमी सादात" ने इस्लाम धर्म के फैलाने में जो २ गुप्त हिक्मतें कीं और लाभकारी सिद्ध हुईं उनका वर्णन इस पुस्तक

में है। अतएव आरम्भ से अब तक के समस्त षड्यन्त्रों को यदि हिन्दू जनता भली प्रकार से जान लेगी तो मेरा दृढ़ विश्वास है कि जिस प्रयोजन की सिद्धि के लिये ख्वाजा साहेब ने अपनी पुस्तक लिखी है उसमें सफल नहीं होंगे, किन्तु यदि हिन्दू जनता ने उन सब षड्यन्त्रों के जानने की चेष्टा न की या जान कर भी अपनी गाढ़निद्रा से सचेत न हुई तो वह दिन दूर नहीं जब एक करोड़ क्या सारे ही हिन्दुओं का नाम भारतवर्ष, नहीं २, सारी दुनियां से मिट जावेगा।

देश के हिन्दू मुसलमान बड़े २ नेता हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के लिये अपनी जान खपा रहे हैं और सैकड़ों नहीं हजारों इसी एकता के लिये जेल की कठिन से कठिन यातनायें भोग रहे हैं, और इसी एकता के लिये लाखों रुपये पानी की नाईं बहा दिये गये, यह कितनी लज्जा की बात है कि मुसलमान सज्जन इस प्रकार की नीच तथा निन्दनीय चालों द्वारा हिन्दू जाति को नाश करने की ठानें। हिन्दू और आर्य्यों के शान्तिपूर्वक अपने धर्मप्रचार और शुद्धि आन्दोलन को, तो एक स्वर से सारे के सारे मुसलमान लीडर बेजा और असामयिक बताते हैं, पर अपने जाति भाइयों द्वारा इस प्रकार की घृणित कार्य्यवाहियों को बुरा कहना तो दूर रहा, उल्टे उनका समर्थन कर रहे हैं। यही कारण है कि जिसने एक कट्टर कांग्रेस के अनुयायी को इस पुस्तक के लिखने को उद्यत किया। आशा है कि हिन्दू नर नारी इस पुस्तक को पढ़कर सचेत होंगे और अपने धर्म की रक्षा का कुछ प्रयत्न करेंगे और मुसलमान भाई अपनी करतूतों पर पश्चात्ताप करके ऐसे निन्दनीय हथखन्डों को करने से बाज़ आवेंगे।

—लेखक.

ओ३म्

भयानक षड्यन्त्र

ख्वाजा हसननिज़ामी के षड्यन्त्रों का भण्डाफोड़

ख्वाजा साहब ने "दाइये इस्लाम" नामी किताब द्वारा भारतवर्ष में आग लगादी है। मुसलमानों ने उस किताब के शब्द २ पर अमल करना आरम्भ कर दिया है। समाचार-पत्र पढ़ने वाले लोग जानते हैं कि अब चारों ओर से यही समाचार आरहे हैं कि मुसलमान लोगों ने हर प्रकार से हिन्दुओं को नष्ट भ्रष्ट करने की ठानली है। कांग्रेस के बड़े बड़े नेता तन मन से हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये प्रयत्न कर रहे हैं, पर ज्यों २ वे प्रयत्न करते हैं पारिणाम उलटा निकलता है। ऐसा क्यों होरहा है ? इस प्रश्न को हल करने के लिये बड़े बड़े महान् पुरुष अपना २ दिमाग़ लड़ा रहे हैं फिर भी अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार मैं जिस परिणाम पर पहुंचा हूँ वह नीचे देता हूँ :—

हिन्दू (आर्य्य) सदा से सरल स्वभाव वाले रहे हैं, हरएक की बात पर विश्वास करके उस पर अपना सब कुछ वारने को तैयार रहते हैं, उन्होंने अपने किसी काम में चाहे वह धार्मिक प्रचार हो, चाहे राजनैतिक, चाहे सामाजिक हो और चाहे शरीर से सम्बन्ध रखता हो, कभी भी छल कपट नहीं किया और न कभी पालिसीबाज़ी से काम लिया। बड़े से बड़े बादशाह के सम्मुख भी साफ़ साफ़ कह दिया, जिसके कारण उन्हें अपना

सब कुछ खोना पड़ा है। मैं इस स्थान पर उन सब घटनाओं को लिखकर पुस्तक को बढ़ाना नहीं चाहता कि किस प्रकार से अक़बर और औरंगजेब आदि बादशाहों तक के सम्मुख हिन्दुओं ने अपने अन्दर की बात नहीं छिपाई और उसके उत्तर में उन्हें अपनी जान तक देनी पड़ी, ये सब घटनायें इतिहास पढ़ने वाले पाठक जानते ही हैं। मैं यहां पर केवल उस भारतवर्षव्यापी आन्दोलन का उल्लेख करना चाहता हूँ जिसे महात्मा गान्धीजी ने जारी किया था। महात्माजी ने हिन्दुओं को मुसलमानों से बिना किसी शर्त के एकता करने की आज्ञा दी, हिन्दुओं ने दिलोजान से स्वीकार किया, केवल वाणी से नहीं वरन् कार्य से भी उसे करके दिखा दिया, लाखों रुपये उनके खिलाफ़त फण्ड में दिये, हज़ारों मनुष्यों ने उसी खिलाफ़त के लिये जेल की कड़ी से कड़ी यातनाओं को सहा, कट्टर हिन्दुओं ने उनके हाथ का ही नहीं वरन् उनके जूंठे गिलासों में पानी पिया और एक साथ बैठ कर खाना तक खाया। उसके उत्तर में उन्हे क्या मिला? मालाबार और मुल्तान का भयङ्कर और हृदयविदारक क़त्ले-आम व लूट मार! म० गान्धीजी और बहुत से हिन्दू नेताओं ने कहा, "भूल जाओ और आगे अवसर दो," फिर क्या मिला, "अमृतसर, लाहौर, अजमेर, सहारनपुर, मेरठ, पानीपत, आगरा, नागपुर और गोंडा आदि की चढ़ाइयां"।

एक ओर से मुसलमानों ने हिन्दुओं को इस प्रकार से तबाह करने की ठानी तो दूसरी ओर से ख्वाजा हसननिज़ामी और मौलाना अब्दुलबारी आदि ने पुस्तकों, लेखों तथा व्याख्यानों द्वारा उन्हें मिटाने का खुला चेलेंज दिया। उनको उपरोक्त कार्यवाहियों पर मुझे दुःख नहीं है पर दुःख है तो इस बात का कि उन्होंने छुपे २ बड़े २ गुप्त षड्यन्त्र बनाकर हिन्दुओं की सरलता का अनुचित लाभ उठाया। मुसलमानों के भारतवर्ष में आने की

तारीख से अब तक का इतिहास पढ़ जाइये, आपको आदि से अन्त तक यही मिलेगा।

जहाँ मुसलमान सदा हिन्दुओं के सर्वनाश का विचार करते रहे, वहाँ वे सदा अरब, टर्की और काबुल को अपनी मातृभूमि समझते रहे और समझते हैं। उन्हें भारत के हानि लाभ से कुछ सरोकार नहीं उन्हें यदि प्रेम है तो उन मुल्कों से जहां से उनका कोई लाभ नहीं, उस धर्म पुस्तक से जो उनके लिये कुछ हितकर नहीं और उन विदेशी नेताओं से जिनका उनसे अब कुछ भी सम्बन्ध नहीं। यह क्यों ? केवल इसलिये कि भूल से, लोभ से, भय से अथवा और किन्हीं कारणों से उनके मत के ये अनुयायी बन गये हैं और इसलिये अपनी ओर से दो शब्दों में यही उत्तर है कि जबतक मुसलमान लोग अपनी मातृभूमि के हित को अपना हित और अहित को अपना अहित न समझेंगे तब तक हिन्दू मुस्लिम एकता कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है।

मुसलमान लोग कई सौ वर्ष हिन्दुओं पर शासन करने के कारण अपने को शासक जाति मानते हैं, अपने कई राज्यों के बल पर फिर से भारत पर शासन करने के स्वप्न देख रहे हैं और दुर्भाग्य से "पान-इस्लामिक" आन्दोलन ने उनकी इस आकांक्षा को और भी बढ़ा दिया है। अतएव ऐसी दशा में उनसे एकता की आशा करना क्या भूल की बात नहीं है, पाठकगण स्वयं विचार करलें।

ऊपर जो कुछ लिखा गया वह तो है सामयिक परिस्थिति की बात, अब पाठकगण ख्वाजा हसननिजामी की बात सुनें। आपने "दाइये इस्लाम" नामी पुस्तक में जो कुछ लिखा है उसे "खतरे का घण्टा" नामी पुस्तक में अच्छी तरह बता दिया गया है। मुसलमानों ने जिस प्रकार से दाइये इस्लास में बताये हुए हथकन्डों द्वारा हिन्दुओं को मुसलमान बनाना आरम्भ कर दिया है इसके दो चार उदाहरण यहाँ पर दे देना अनुचित न होगा।

क़न्नौज तहसील का एक कान्यकुब्ज लड़का, जिसकी आयु १८ वर्ष की थी, मुसलमान बनाया गया और बनाया भी वहाँ ही के एक मुसलमान ने, जिस स्थान का वह लड़का था। क़न्नौज का एक मुसलमान कान्स्टेबल दिल्ली में नौकर था, जब घर आया उस लड़के से कहा कि तुम मेरे साथ दिल्ली चलो, तुमको मैं वहाँ नौकरी दिला दूंगा, मियां लड़के को दिल्ली ले गये और नौकरी तो न दिलाई, किन्तु मुसलमानी दिलाकर पढ़ने अवश्य भेज दिया। जब उस ब्राह्मण पुत्र को यह प्रतीत हुआ कि मेरा प्राण से भी प्यारा धर्म भ्रष्ट किया जावेगा तो उसने कई प्रकार के प्रयत्न किये कि किसी प्रकार भाग जाऊं। किन्तु उन धर्मद्रोहियों के पंजे से न निकल सका।

ज़िला आरा का सरयूपारीण ब्राह्मण का एक चौदह वर्ष की आयु वाला लड़का भी नौकरी के बहाने मुसलमानों ने भगाया और उसे मुसलमान बनाने का यत्न कर ही रहे थे कि भारतीय हिंदू शुद्धि सभा ने बचा लिया और अपने व्यय से उसको उसके घर भेज दिया।

छोटे अवस्था के लड़के और लड़कियां आगरे के हलवाइयों की दूकानों पर जूंठे दोना चाटते फिरते थे, उनसे पूंछने पर मालूम हुआ कि कई ब्राह्मण बालक हैं तो कई क्षत्रिय पुत्र हैं। एक लड़के से पूछने पर कि तुम कौन जाति हो, उसने अपने को मुसलमान बताया, बाप के सम्बन्ध में पूछने पर उसने बताया कि वह जाट था और कहा कि माता पिता के मरजाने पर जब मैं भूखों मरने लगा तो एक आदमी ने मुझे दो रोटियाँ दीं, जब मैंने खालीं तो उसने कहा कि मैं मुसलमान हूँ, तू भी मुसलमान होगया, अब मैं तुझे रोज़ रोटी दूंगा। इसी प्रकार के दो बालक और भी, चार दिन तक हम तीनों को कलमा सिखाता रहा, जब हम सबने कलमां याद कर लिया तो उसने कहा अब तुम सब पक्के मुसलमान हो गये। जाओ, माँगो और खाओ?

ज़िला मुरादाबाद ग्राम रामपुर के एक लड़के को मुसलमान लोग मुसलमान बनाने के लिये पंजाब लेजा रहे थे, मालूम होने पर बटाला के रेलवे स्टेशन पर उनसे छीना गया।

हिन्दुस्तान के दुलारे भारत के प्यारे भगवान् कृष्णचन्द्रजी की जन्म भूमि मथुरा की भी एक दुर्घटना सुनिये, जिसका अभी हाल ही में अदालत में फैसला हुआ है। १६ वर्षीय चौबिन घर में वैमनस्य के कारण रात्रि को यमुना में डूबने जारही थी, द्वारिकाधीश के मन्दिर के पहरेवालों ने उसको रोक कर और समझा कर नगाड़ची, जो द्वारिकाधीश के मन्दिर के ऊपर रात्रि के ११ से १२ बजे तक नगाड़ा बजाया करता था, के साथ कर दी और नगाड़ची से कह दिया कि संभाल कर उसको उसके घर पहुँचा आना, किन्तु मुसलमान नगाड़ची उसे मुसलमानों के पास ले गया और जो करना था उसके साथ किया। पता लगाने पर भी मुसलमानों ने उस स्त्री को जीती हुई न दिया अपितु उस अरक्षिता अबला को गला दबाकर मारडाला और एक कुए में फेंक दिया और भी एक ब्राह्मण की स्त्री को उठा ले गये और अब वह वेश्या बनी मथुरा ही में मौजूद है।

भरतपुर के एक अहीर का लड़का जिसकी आयु १६ वर्ष की थी नौकरी के लिये दिल्ली गया किन्तु नौकरी न मिली और जो कुछ पास था उसको खो बैठा। जब भूखा मरने लगा तो एक मुसलमान ने जामामस्जिद में लेजाकर मुसलमानी कर (इन्द्रिय की खाल काटने को मुसलमानी कहते हैं) डाली, जब तक घाव अच्छा न हुआ तब तक तो उसको खिलाता रहा, अच्छा होने पर कहदिया कि जाओ, मांगो और खाओ!

शहर फतेहपुर में एक मुसलमान रईस के लड़के को एक हिन्दू टीचर पढ़ाता था। एक मुसलमान ने यह देख उनको लानत मलामत किया, उसी दिन हटाकर मुसलमान टीचर रक्खा गया।

बंगाल से २ बंगाली ८ व १० वर्ष के बालकों को एक मुसलमान उड़ाकर दिल्ली ले गया और कोतवाली में उनके नाम मुसलमानी बताकर यतीमख़ाने में दाख़िल कराना चाहा, किन्तु बात प्रकट होगई और वे हजरत पकड़े गये।

सहारनपुर के एक ग्राम के पास बाग़ में बरात ठहरी हुई थी, कुछ मुसलमानों ने उसपर हमला किया और वर वधू के जेवरों तक को लूटने से न छोड़ा। जब इस बात की रिपोर्ट पुलिस को की गई और कई मुल्ज़िमों को पकड़ कर कोतवाली लेजाया गया तो मुसलमान कोतवाल ने उन्हें छोड़ दिया और कहा जाता है कि रिपोर्ट तक उनकी न लिखी।

अमृतसर में जब एक मुसलमान प्रचारक साधु के भेष में कई हिन्दू बच्चों को उड़ाने के अभियोग में पकड़ा गया, तो उसने बताया कि उसके साथ १७ पुरुष और १३ स्त्रियाँ और हैं जो साधु के भेष में हिन्दू बच्चे व विधवाओं को उड़ाते और मुसलमान बनाते हैं।

इसी प्रकार जगरावां में भी २७ मुसलमान साधू के भेष में पकड़े गये हैं।

सुना गया है कि अजमेर के सिलावटों (राजों) को मुसलमान मुल्लाओं की ओर से आज्ञा हुई है कि उनके साथ जितनी हिन्दू मजदूरनें, जो प्राय: रेगर जाति की होती हैं और मज़दूर लड़के रहते हैं उन सबको मुसलमान बनावें।

दिल्ली में बीसियों बच्चे रोज़ उड़ाये जा रहे हैं और यह बात बड़े दुःख से लिखना पड़ता है कि कई हिन्दू टांगे वाले रुपयों की ख़ातिर इस काम को मुसलमानों की ओर से कर रहे हैं।

बांदे के चार मुसलमान एक स्त्री को उसके पति की अनुपस्थिति में कुंये पर से, जहाँ वह पानी भरने गई थी, उठा लेगये, अन्त में अदालत से उन्हें सज़ा मिली।

सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस मेरठ के हैडक्लर्क के १० वर्ष के

बालक को १ मुसलमान टिकट कलेक्टर बहका कर ले गया और उसकी चोटी काटने को ही थे कि प्रजारक्षिणी सभा के वालंटियरों ने ऐन मौक़े पर पहुंच कर उसे छुड़ाया।

उपरोक्त लिखी हुई बहुत साधारण घटनायें हैं। पुस्तक बढ़ जाने के भय से उन तमाम का उल्लेख नहीं किया गया, जो प्रतिदिन हुआ करती हैं और उनके द्वारा सारे भारतवर्ष में हज़ारों हिन्दू विधवायें और नवयुवक मुसलमान बनाये जा रहे हैं। जहां एक ओर मुसलमानां की इस प्रकार चालें चली जा रही हैं, वहां दूसरी ओर हिन्दुओं का बहिष्कार करने की तरकीबें भी सोची जारही हैं। मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ व्यवसायों को करना आरम्भ कर दिया है। हिन्दू नौकरों को अपने यहां से अलग करना, उनकी दूकान से कोई वस्तु न खरीदना, यह सब काम बड़े वेग से किये जारहे हैं, पर हिन्दू अब भी अपनी नींद में मस्त हैं। एक तो कुछ करने को तैयार नहीं होते और यदि बहुत प्रयत्न से कुछ किया भी तो शीघ्र ही हतोत्साह होकर बन्द कर देते हैं। ऐसी दशा में इस जाति की ईश्वर ही रक्षा करे तो हो सकती है, अन्यथा नहीं।

हिन्दुओं की इस प्रकार की लापरवाही देखकर मुसलमानों ने अब बाजे का एक नया षड्यन्त्र रचा है। हिन्दुओं के शादी विवाहों तथा ग़मी तक के बाजे बन्द कराने पर ही बस नहीं किया उनके त्यौहारों और धार्मिक जुलूसों तक के बाजे बन्द कराने पर उतारू हो गये हैं, जहां कहीं लूट मार या और शरारत का मौका न मिला, झट बाजे का प्रश्न उपस्थित कर दिया कि मस्जिदों के सामने बाजे नहीं बजने देंगे। पब्लिक सड़क जो अधिकतर हिन्दुओं के रुपये से सरकार बनवाती है उसपर बाजे बन्द कराने की नई और बिलकुल नई चेष्टा है। दुःख है कि सरकार भी इस समय किसी विशेष पालिसी का अनुभव रख कर भी उनके कहने पर बाजे बन्द करा देती है। क्या कभी हिन्दुओं

ने उनके मोहर्रमी बाजों को मन्दिर के सामने रोका है। यदि मुसलमान अपनी मस्जिदों के सामने बाजे नहीं चाहते तो उन्हें चाहिये कि अपनी मस्जिद शहर से बाहर बनावें। अस्तु कहने का मतलब यह है कि अब इन सब षड्यन्त्रों से बहुत शीघ्र हिन्दुओं को सावधान होजाना चाहिये।

फ़ातमी दावत इस्लाम।

जिस पुस्तक का उल्लेख मैंने अपनी भूमिका में किया है और जिसके आधार पर यह पुस्तक लिखी जा रही है उसका नाम "फ़ातमी दावत इस्लाम" है। इसकी प्रथमावृत्ति ४००० छपी है और तीन रुपये एक प्रति का मूल्य रक्खा गया है। पुस्तक के टाइटिल पर ही लिखा गया है कि इस में 'उन ख़ुफ़िया हिक़मत-अमलियों का बयान है, जो इस्लाम के प्रचार करने में मुफ़ीद हुई"। ख़्वाजा साहब पुस्तक के अन्त में लिखते हैं कि वर्षों से मैं इस कोशिश में लगा था, गुजराती और अंग्रेज़ी पुस्तकों के तर्जुमें, बहुतसा धन व्यय करके कराता और पढ़ता था, भिन्न २ स्थानों में बार बार जाता और जहां कोई मतलब की बात मिलती नोटकर लेता था। इस प्रकार से बड़े परिश्रम करने पर इस पुस्तक को तय्यार किया गया है।

पाठकगण! मैंने ख़्वाजा सा० की उपरोक्त पुस्तक से वह सब बातें चुनली हैं, जिनका सम्बन्ध भारतवर्ष से था और उन्हीं को इस पुस्तक में स्थान दिया गया है। जिन २ बातों का सम्बन्ध दूसरे देशों से था, उन सब को छोड़ दिया गया है, साथ ही साथ बहुतसी ऐसी बातें भी इस पुस्तक में बढ़ा दी गई हैं जो ख़्वाजा सा० की पुस्तक लिखने के बाद उन्होंने या उनके अनुयायियों ने जारी की है।

परनामी मत के चार लाख अनुयाइयों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र

परनामी मत के अनुयायी इस समय लगभग ४ लाख हैं जो पन्ना, बुन्देलखण्ड, जामनगर, काठियाबाड़, सूरत, कमालिया, भावनगर, पाकपटन, मान्ट गोमरी, लायलपुर, अम्बाला, दिल्ली और नैपाल आदि नगरों में फैले हैं।

यह मत औरंगज़ेब बादशाह के समय, धनी देवचन्द नाम के एक कायस्थ द्वारा चलाया गया था। इनके चेले प्राणनाथ ने इसे अधिक उन्नति दी, इनकी धार्मिक पुस्तक का नाम श्रीकुलज़ुम स्वरूप है, जो १८ भागों में विभक्त है। इसे अबतक हस्तलिखित ही रक्खा गया है, क्यों कि छपा देने में अन्य मतावलम्बियों के हाथ पड़ जाने का भय है। यह इतना गुप्त रक्खा गया है कि इतने वर्ष हो जाने पर भी अब तक इसे कोई नहीं देख पाया, इस पुस्तक की भाषा हिन्दी गुजराती, मारवाड़ी तथा पंजाबी मिली हुई है। इस मत के लोग श्रीकृष्ण भगवान् को ११ वर्ष ५२ दिन की आयु तक अवतार मानते हैं, इसके पश्चात मोहम्मद साहेब को उनका अवतार कहते हैं। इसी कारण अधिकांश लोग श्रीक़ुलज़ुम-स्वरूप के साथ क़ुरान को भी पवित्र पुस्तक मानते हैं। कुछ लोग पुराणों को भी मानते हैं, पर कहने मात्र को उन्हें पढ़ते नहीं। इनके अतिरिक्त मोहम्मद साहब का मेराजनामा, वफ़ातनामा, नूरनामा भी इनकी धार्मिक पुस्तकें हैं। विकस्वरूप नाम पुस्तक में भगवान् कृष्ण व मोहम्मद

सा० पर जो २ अत्याचार हुए उनका वर्णन है। कई लोग भागवत को भी मानते हैं और कहते हैं कि देवचन्द महाराज ने १२ वर्ष भागवत सुनी थी। मांस व मदिरा का सेवन नहीं करते, इनका ईश्वर साकार है और एक जगह रहता है, जिसको परम-धाम कहते हैं, जहाँ उनके ईश्वर की १२०००, स्त्रियां रहती हैं। परमधाम में सर्व प्रकार को वस्तुयें मिलती हैं। ये लोग अपने मुर्दे प्रायः जल में प्रवाह करदेते हैं और अपनी शादी विवाह अधिकतर आपस में ही करते हैं।

इनके लगभग ढाईसौ मन्दिर हैं जहाँ "श्री क़ुलज़ुमस्वरूप" को रखते हैं, क्योंकि मूर्ति नहीं पूजते। पंजाब में १२ जगह और गुजरात में ४२ जगह मन्दिर हैं। सबसे बड़ा मन्दिर पन्ना में है। ये लोग पन्ना को पद्मावती और जामनगर को नूतपुरी कहते हैं। जामनगर में आजकल जो इनके महन्त हैं वह नैपाल के हैं, इससे पहिले हैदराबाद दक्षिण के थे। प्राणनाथ अपने को "मेंहदी" का अवतार कहते थे और उन्हीं ने क़ुलज़ुम-स्वरूप को लिखा था, जिसको आसमानी किताब कहते थे। क़ुलज़ुम-स्वरूप के ऊपर एक कपड़ा डालते हैं और उसके ऊपर दो ताज रखते हैं, जिनको 'मुकुट' कहते हैं, उसी के पास कुछ थालियाँ वगैरह रख कर इस प्रकार से आडम्बर करते हैं कि जिससे हिन्दू लोगों को मूर्ति होने का भ्रम होजाता है, क्योंकि उसके सामने आर्ती करते और घन्टा भी बजाते हैं, उस जगह लोग आकर शिर झुकाते हैं और मन्दिर का पुजारी अपने मत के लोगों को प्रसाद देता है। ये लोग एक दूसरे से मिलने पर आपस में प्रणाम करते हैं। यदि किसी हिन्दू लड़की को व्याह करके लाते हैं तो पहिले परनामी बना लेते हैं तब उसके हाथ का खाते हैं।

इस मत में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य सभी लोग हैं, बुन्देलखण्ड के कई छोटे मोटे राजे भी इसी मत के हैं। इसमें तीन

विभाग हैं, एक तो साधारण होते हैं, दूसरे जिनको 'धर्मी' कहते हैं और जो मन्दिर में पूजा पाठ करते हैं, ये व्याख्यान देते हैं और गृहस्थी भी होते हैं, तीसरे साधु जिनको बाबाजी कहते हैं, ये मन्दिर की सेवा करते हैं और शादी विवाह नहीं करते। इस मत की कई शाखायें मेराज पन्थ और छज्जू पन्थ आदि हैं।

ये लोग माथे पर तिलक और गले में जनेऊ पहिनते हैं, शिर पर चोटी रखते हैं। मर्दुम शुमारी में अपने को हिन्दू लिखाते हैं।

ये लोग भी राधास्वामी मत वालों की तरह अपने मत को सृष्टि के आदि से बताते हैं और कहते हैं कि सन् १६६४ में इस को देवचन्द्र ने प्रगट किया। पन्ना व जामनगर में बड़े बड़े मेले होते हैं।

इन चार लाख भाइयों का संक्षिप्त वृत्तान्त ऊपर लिखा गया है। इनकी लगभग सभी बातें हिन्दुओं की सी हैं, यही नहीं वरन् अपने को ये लोग हिन्दू कहते भी हैं। इनमें मुसलमानी केवल कुछ ही बातें हैं। २, ३ समय संध्या करने के बदले ५ बार प्रार्थना पश्चिम की ओर मुंह करके करते हैं। राधास्वामी पंथवालों की तरह मोहम्मद साहब को भी अवतार मानते हैं। अपनी धर्म पुस्तक में उनकी बहुतसी बातें मिलाली हैं, किन्तु अब इनको पक्के मुसलमान बनाने के लिये जो जो षड्यन्त्र ख्वाजा हसननिज़ामी ने रचे हैं वे पाठकगण ध्यानपूर्वक पढ़ें।

यह तो ख्वाजा सा० ने अपनी गुप्त पुस्तक में लिख ही दिया है कि ये अपने को मर्दुम-शुमारी में हिन्दू लिखाते हैं, क्योंकि इनका रहन-सहन सब बिलकुल हिन्दुओं जैसा है। आगे आप लिखते हैं कि यद्यपि इस पंथ के चलाने वाले देवचन्दजी व प्राणनाथजी को हिन्दू लिखा है, किन्तु इसका असली प्रवर्त्तक यानी मुसलमानों के इस्माइली गिरोह का प्रचारक मालूम देता है, क्योंकि इनके

बहुत से सिद्धान्त वही हैं जो आग़ाखानियों और इमामशाहियों ने हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिये बनाये थे, यानी मोहम्मद सा० को कृष्ण भगवान् का अवतार मानना या जो रूप कृष्ण भगवान् में था वही रूप मोहम्मद में था।

आपने उसी गुप्त किताब में एक जगह लिखा है कि मानादोर काठियावाड़ में नवाब साहेब के मकान पर जहाँ मैं ठहरा था एक परनामी साधू से मुलाकात हुई, वह ७० वर्ष की आयु के थे, डाढ़ी मूंछ सब मुँडी थी, माला गले में और एक पुस्तक हाथ में थी, धोती बांधे हुए थे, उन्होंने बहुत सी .कुरान की बातें मुझसे कहीं और बहुतसी ऐसी बातें बताईं जिससे मुझे ज्ञात हुआ कि मुसलमान प्रचारकों ने मोहम्मद के मेराज (.खुदा से (मुलाक़ात व वार्तालाप) की बात को इन लोगों में कहकर अपना मतलब बहुत अच्छी तरह सिद्ध किया है।

ख्वाजा सा० ने एक मुसलमान प्रचारक, जिसने अपना नाम प्रेम रख लिया है, को इनके बीच काम करने के लिये नियत कर दिया है। उसने तथा कुछ और मुसलमान प्रचारकों ने बड़े ज़ोर से इनमें काम करना आरम्भ कर दिया है और उन्हें अपने कार्य्य में सफलता भी हो रही है। यदि हिन्दू महासभा या आर्य समाज ने इनकी ओर ध्यान न दिया तो ये बहुत शीघ्र मुसलमान बन जावेंगे, क्योंकि इनके अन्दर मुसलमानी सिद्धान्त बड़ी दृढ़ता से जमे हुए हैं, जिनके द्वारा मुसलमान प्रचारकों को अपने कार्य में सफलता की बहुत आशायें हैं। ख्वाजा सा० लिखते हैं कि ये लोग अपने को हिन्दू कहते हैं, इससे इनकी ठीक २ गणना नहीं हो सकी। सम्भव है कि चार लाख से ये बहुत अधिक हों। ऐ हिन्दू (आर्य्य) नेतागण ! क्या आप इनको मुसलमानों के गाल में समाजाने देंगे या इनके बचाव का कुछ प्रबन्ध करेंगे ?

५० लाख से अधिक आग़ाख़ानी हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र।

हज़रत नज़ार के पश्चात् इस मत ने बहुत उन्नति की और लगभग सारी दुनियां में इसने अपने प्रचारक भेजे। ख़्वाजा साहेब स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि इस मत में बहुत सी झूठी और गप्प बातें तथा भांति भांति के किस्से कहानियां प्रचलित हैं, यही नहीं मुसलमान लोग इस मत के लोगों को क़ाफ़िर तक कहने में सङ्कोच नहीं करते, किन्तु जब हिन्दुओं को आग़ाख़ानी बनाने का प्रश्न आता है, तब उन्हीं आग़ाख़ानियों के कार्य्य की प्रशंसा करते और आग़ाख़ानियों को सच्चा मुसलमान बताते हैं, यह कितने अन्याय की और पक्षपात की बात है? आग़ाख़ानी मत में अली की बड़ी इज़्ज़त है। ये एक दूसरे से जब मिलते हैं तो पहिले "या अली मदद" कहते हैं, उसके उत्तर में दूसरा "मौला अली मदद" कहता है।

जो हिन्दू आग़ाख़ानी होता है उसका नाम आग़ाख़ाँ जो बताते हैं वह रक्खा जाता है। यह लोग विष्णु, अली, ब्रह्मा, मोहम्मद, महेश, आदम और शक्ति वग़ैरह को मानते हैं। यह कहते हैं कि कलियुग का अथर्ववेद ,कुरान और जगद्गुरु मोहम्मद है। इनका मत है कि सृष्टि के आदि से हज़रत अली का नूर औलाद दर औलाद प्रलय तक प्रवेश करता रहता है। अक्सर लोग कहते हैं कि आग़ाख़ां के पास अली के हाथ का लिखा हुआ कुरान और अन्य कई चीजें हैं पर आग़ाख़ाँ उन्हें प्रगट नहीं करते। आवागमन के सम्बन्ध में यह कहते हैं कि जो न ईमानदार हो और न काफ़िर उसे दुबारा जन्म लेना पड़ता है, जो ईमानदार हो वह खुदा में मिल जाता है और जो काफ़िर हो वह नर्क में जाता है। तीन बार इनकी सन्ध्या होती है, प्रातः सायंकाल और रात्रि।

भारतवर्ष में जितने आग़ाख़ानी खोजे हैं उन्हें कबीरुद्दीन और शमशुद्दीन ने मुसलमान किया था, इनके प्रचारक बहुधा साधुओं का भेष धारण करके अवतारों के भजन गाने और कलियुग में आने वाले अवतार की घोषणा करते हैं। हिन्दू लोग कलङ्की अवतार होने की प्रतिज्ञा करते हैं इससे इन प्रचारकों का प्रभाव हिन्दुओं पर खूब होता है और बहुतसी बातें, जो आग़ा-ख़ानी प्रचारकों द्वारा सुनते हैं, ग्रहण कर लेते हैं। इनके प्रचारकों द्वारा पंजाब में लाखों कहार व सुनार आग़ाख़ानी या शमशी मत के अनुयायी बनगये हैं।

कुछ वर्ष हुए जब आर्य्यसमाज ने इनको ठीक रास्ते पर लाने का प्रयत्न किया था, किन्तु एक ओर तो आर्य्यसमाज ने समाचार पत्रों में खूब हुल्लड़ मचाकर और इने गिने कुछ लोगों को आर्यधर्म में लाकर ही सन्तोष कर लिया, दूसरी ओर सर आग़ाख़ां ने सैकड़ों प्रचारकों को उनके अन्दर काम करने के लिये लगा दिया, जिन्होंने केवल इतना ही नहीं कि उन्हें दृढ़ आग़ाख़ानी बनाया, किन्तु आग़ाख़ां की आज्ञानुसार उनके नाम भी मुसलमानी रख दिये जिससे हिन्दुओं को यह पता भी न लगसके कि ये कभी हिन्दू थे। ख़्वाजा साहेब लिखते हैं कि सर आग़ाख़ां ने अपने प्रचारकों को हुक्म दिया था कि जो लोग अपना नाम मुसलमानी न रक्खें उन्हें अपने मत से निकाल दो, इसका परिणाम यह हुआ कि लाखों आग़ाख़ानी हिन्दू अपने २ नाम मुसलमानी रखकर पक्के मुसलमान बनगये और आर्य्यसमाजियों का प्रभाव निष्फल गया। (आर्य्य-समाजियों ने जो थोड़ा बहुत प्रयत्न किया उसका फल अवश्य हुआ पर ख़्वाजा साहब यह तो बतावें कि क्या वह हिन्दू पक्के मुसलमान बन गये या मुसलमानों के सिद्धान्तानुसार काफ़िर बने? क्योंकि आग़ाख़ानी मत तो मुसलमानों की दृष्टि में कुफ़्र फैलाता है। कितना अन्धेर और पक्षपात है! यूं तो आग़ाख़ानी क़ाफ़िर किन्तु

हिन्दुओं का धर्म भ्रष्ट करने पर उसकी प्रशंसा और वे आगाखानी हिन्दू पक्के मुसलमान ! धिक्कार है ऐसे पक्षपात पर !!)

खवाजा साहेब आगे पृष्ठ २०१ में लिखते हैं कि अब भी बम्बई व कलकत्ता में बड़े बड़े योग्य आगाखानी इस्लाम के प्रचार में लगे हुए हैं और मौजूदा इमाम सर आगाखां की ओर से जो नित्यप्रति जलसे किये जाते हैं, उनमें हज़ारों हिन्दू सम्मिलित होते हैं। खवाजा सा० उनकी प्रशंसा करके सुन्नी मुसलमानों को सलाह देते हैं कि जिस अक़्लमन्दी व हिकमतअमली से वे लोग मुसलमान बनाते हैं, तुम भी सोचो और अमल करो।

आगाखानी प्रचारक हिन्दुओं को अपने चंगुल में फंसाने के लिये हिन्दुओं के बहुत से पौराणिक मतों के कपोलकल्पित सिद्धान्तों को तोड़ मरोड़ कर और उनमें जहां ओ३म्, कृष्ण, राम इत्यादि नाम हैं वहां अली और मोहम्मद आदि के नाम डाल कर प्रचार करते हैं। खवाजा सा० अपनी किताब में लिखते हैं कि मैंने आगाखानियों के एक जलसे में हिन्दुओं की छाती पर तमग़ा लगाये देखा उसमें ओ३म् लिखा था, किन्तु वह ओ३म् इस ढंग से बनाया गया है जो उर्दू में अली भी पढ़ा जा सकता है। उसका नमूना आगाखानी पुस्तकों में भी दिया है। हम अपने पाठकों की जानकारी के लिये उसे नीचे देते हैं:—

आगाखानियों ने अपनी किताबों में भी लिखा है कि 'अली ओ३म् है और ओ३म् अली है'। उनका कहना है कि क़ुरानमें "ओ३म्" का अली बताया है और इसके लिये क़ुरान की एक

आयत का हवाला देते हैं जिसका अर्थ है कि "खुदा ने फ़रमाया कि हिकमत वाले अली मेरे नज़दीक ओ३म् किताब यानी ओ३म् है"।

ख्वाजा सा० ने अपनी पुस्तक में म० गान्धी पर भी आक्षेप किया है, आप लिखते हैं कि कुछ आर्य्यसमाजियों के कहने पर म० गांधी ने आग़ाख़ानी हिन्दुओं को बम्बई में बुलाकर कहा कि तुम अपनी जाति से बाहर न जाओ, क्योंकि हिन्दू धर्म बहुत अच्छा है। उस पर आग़ाख़ानियों ने महात्माजी को उत्तर दिया कि हम तो अपने असली घर में पहुंच गये हैं, क्योंकि जो ज्योति राम, कृष्ण, विष्णु व ब्रह्मा वग़ैरह में थी वही मौजूदा सर आग़ाख़ां में है। यह उत्तर सुनकर महात्माजी और सब आर्य्यसमाजी चुप हो गये और इसका प्रभाव इतना पड़ा कि जो हिन्दू आग़ा-ख़ानी न थे वे भी आग़ाख़ानी हो गये। यह किस्सा ख्वाजा सा० का कहां तक सत्य है, आर्य्यसमाजी तो अच्छी तरह जानते हैं पर यदि सर्वसाधारण को जानना हो तो महात्माजी से पूछलें।

पृष्ठ २०५ में ख्वाजा सा० लिखते हैं कि यद्यपि नज़ारियों ने इस मत को बहुत फैलाया किन्तु, मौजूदा सर आग़ाख़ां के पूर्व यह बिल-कुल अलग ही गिरोह था और मुसलमानी ख़याल बहुत कम था, परन्तु मौजूदा सर आग़ाख़ां ने मुसलिम यूनीवरसिटी, अलीगढ़ कालिज और अन्य इस्लामी आन्दोलनों में भाग लेकर अपने गिरोह को मुसलमानों से बहुत कुछ मिला दिया और अब आग़ाख़ानी अपने आप को पक्के मुसलिम मानने लग गये हैं। आग़ाख़ां ने भी साफ़ कह दिया कि गुप्त रहना ठीक नहीं, मेरे सब अनुयायियों को मुसल-मान हो जाना चाहिये। इतने पर भी ख्वाजा सा० को बड़ा दुःख है कि आग़ाख़ां भारतवर्ष में बहुत कम रहते और प्रचार में बहुत कम भाग लेते हैं। अभी हाल ही में सर आग़ाख़ां ने एक करोड़ रुपया हिन्दुओं के ७ करोड़ अछूतों को मुसलमान बनाने के लिये देने का वचन दिया है, क्या हिन्दुओं की आंखें अब भी न खुलेंगी?

२० लाख सत्पन्थियों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र ।
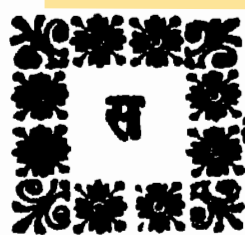
सत्पन्थी अधिकतर गुजरात व काठियावाड़ में हैं। अहमदाबाद के समीप 'पीराना' इनका केन्द्र स्थान है, वहाँ एक बहुत बड़ी दरगाह है, जिसमें सय्यद इमामशाह की मज़ार है। उनकी मज़ार पर रात दिन एक दीपक जलाया जाता है और पास ही उनकी धर्म पुस्तक सतदोनी रक्खी हुई है। इस दरगाह का पुजारी एक हिन्दू है, जिसको सब काका कहते हैं। उसी के पास दरगाह और सब चेलों की आमदनी आती है और उसके नायब सब चेलों के पास जा जा कर उनकी आय का दशवां हिस्सा वसूल करते हैं। ख्वाजा साहेब लिखते हैं कि 'काका' देखने में हिन्दू मालूम देता है पर यथार्थ में यह मुसलमान है।

कुल आमदनी का एक भाग वसूल करने वालों को दिया जाता है, एक भाग दरगाह के व्यय में लगता है और एक भाग सय्यद इमामशाह की औलाद का, जो अहमदाबाद व पीराना में रहते हैं, दिया जाता है। हर सय्यद को शादी के समय भी कुछ नियत धन दिया जाता है, इसके अतिरिक्त और कोई अधिकार सय्यदों को नहीं है, सब काम काका के अधिकार में है।

इस पन्थ में तेली, गड़रिया, कुम्हार, धुनिये, कूंजड़े आदि बहुत हैं। कुछ बनिये व राजपूत भी हैं। इस पन्थ में २ विभाग हैं एक गुप्ती, दूसरा प्रगटी। गुप्ती बहुत हैं पर अब धीरे २ प्रगटी अधिक हो रहे हैं। गुप्ती का पता लगाना बहुत कठिन है। गुप्ती अनुयायी का पता उसके घर के लोगों तक को नहीं होता। जो प्रगटी हो जाते हैं उन्हें अक्सर मोमिन भी कहा जाता है। प्रगटी होने पर वे "शिया लोगों" की तरह नमाज़ पढ़ने के लिये अक्सर जामे मस्जिद में जाते हैं।

इस पन्थ के बनने की कहानी इस प्रकार से प्रचलित है। एक बहुत बड़ा झुण्ड हिन्दुओं का काशी तीर्थ को जा रहा था, रास्ते में सय्यद सा० ने कहा कि यदि काशी का तीर्थ यहां आजावे तो फिर तुम सब लोग क्यों उतनी दूर जाते हो? सबने चकित होकर पूंछा यह कैसे हो सकता है? सय्यद सा० ने कहा आज रात को तुम सब यहां रहकर मेरी मेहमानी स्वीकार करो तो सुबह मैं उत्तर दूंगा। सब लोग वहां ठहर गये। रात को सबों ने स्वप्न में देखा कि वे सब लोग काशी में हैं। सबों ने एक दूसरे से अपने स्वप्न की बात कही, सबों का स्वप्न एक ही क़िस्म का था। अतएव सब लोग सय्यद सा० के पास गये और उनके पैरों में गिर पड़े और कहा कि हम सब को अपना चेला बना लीजिये। सय्यद सा० ने उन सब को अपना चेला बनाकर उनमें से कुछ पढ़े लिखे लोगों को उन्ही में अपना मत फैलाने के लिये नियत कर दिया, जिन्हो ने थोड़े ही दिनों में लाखों चेले कर लिये।

ख्वाजा साहिब लिखते है कि मैं मोहर्रम सन् १३२८ हिजरी में उनके एक प्रचारक सय्यद यावरअली शाह साहब से मिलने गया तो उनके ही अलम (झण्डे) रक्खे थे उनपर सफेद कपड़ों के फरेरे थे और बहुत से हिन्दू गड़रिये उनके चारों तरफ बैठे थे और सय्यद सा० उपदेश कर रहे थे। दूसरे दिन वहां गड़रिये उन अलम को उठाये सय्यद सा० के साथ चल रहे थे। इस प्रकार से उन्होंने हजारों गड़रियों को मुसलमान बनाया था।

इस पन्थ के प्रचारकों ने बड़ी होशियारी से काम लिया है इन्होंने मुर्दे के गाड़ने पर ज़ोर नहीं दिया बल्कि मुर्दों को जलाने को आज्ञा दी है, परन्तु मुर्दे का एक अंगुली पीर के मज़ार के पास गाड़ दी जाती है। धीरे २ अब सारे मुर्दों को भी गाड़ने की प्रथा चलपड़ी है। जिसका प्रचार उन लोगों ने इस प्रकार से किया कि जब लोग अंगुली गाड़ने के आदी होगये और मुसलमानी मत

को अच्छा समझने लगे तो फिर यह कहा गया कि अब अग्निदाह का समय गया अब भूमिदाह करना चाहिये और तब चेले लोग बिना किसी संकोच के भूमिदाह करने लग पड़े।

जनेऊ की दरगाह

बड़े खेद के साथ लिखना पड़ता है कि इस मत के अनुयायियों के तीर्थ पीराना में एक जनेऊ की दरगाह है, जहां हिन्दू लोग इस पन्थ में चेला होते समय अपने जनेऊ उतारते हैं। वहां सब जनेऊ यादगार के तौर पर ढेर किये जाते हैं।

इनकी धर्मपुस्तकों के नाम गुरुवानी, योगबानी और सितोयनी आदि हैं, इस पन्थ को कई शाखाएं नानकपन्थ, कबीरपन्थ और मेराजपन्थ आदि हैं, इनमें और आग़ाख़ानियों में केवल इतना ही भेद है कि ये अपने मुर्शिद को पेशवा मानते हैं और आग़ाख़ानी आग़ाख़ां को हाज़िर ईमान मानते हैं।

बोहरे लोगों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र

सब बोहरे लोग, जो बम्बई व गुजरात में लाखों की संख्या में हैं, यथार्थ में पहिले हिन्दू थे, इनके मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र बड़ी विचित्रता से रचा गया था, जो इस प्रकार से है।

सन् ११३७ ई० में एक मनुष्य याकूब नाम का मिश्र अपना देश घरेलू लड़ाई झगड़े के कारण छोड़कर खम्बायत नामी नगर में, जो गुजरात का एक प्राचीन नगर है, आया और एक माली के घर कुछ दिनों रहा जिसे उसने एक सूखे कुए से पानी निकालने की बाज़ी भरी दिखाकर मुसलमान बना लिया और उसके द्वारा मन्दिर के पुजारी तक से अपनी रसाई करली। धीरे धीरे पुजारी

को भी अपने जाल में फंसा कर मुसलमान कर लिया पुजारी जिस मन्दिर की पूजा करता था उसमें चारों ओर चुम्बक पत्थर लगा कर बीच में लोहे का हाथी इस प्रकार से रक्खा गया था कि जिससे वह बिना किसी चीज के सहारे के खड़ा था।

पुजारी की मदद से याकूब ने एक पैर के पास का चुम्बक पत्थर निकाल लिया, जिससे उस हाथी का पैर जमीन पर टिक गया, फिर उसी पुजारी से वहां के वजीर तथा राजा को कहला भेजा कि हाथी थक गया है इससे उसने अपना १ पैर जमीन पर टेक दिया है। पुजारी ने दूसरे दिन दूसरे पैर के नीचे का चुम्बक पत्थर निकाल कर दूसरा पैर टिका दिया और इसी तरह चार दिन में हाथी को जमीन पर खड़ा कर दिया। इस करामात को देखकर राजा, उसके दरबारी तथा हजारों नर-नारी चकित होगये और पुजारी के आदेशानुसार मुसलमान बने। इन लोगों ने अरब के साथ पहिले पहल व्यवहार (सम्बन्ध) किया, इससे पहिले व्यवहारे और फिर बोहरे कहलाने लगे। याकूब के बाद बहुत से प्रचारक हिन्दुस्तान में जिन्होंने बम्बई, सिन्ध, राजपूताना तथा मालवा आदि प्रान्तों में लाखों आदमियों को मुसलमान बनाडाला।

चिश्तियों के खान्दान द्वारा रचे गये षड्यन्त्र

मुसलमानों में गाना-बजाना हराम है, किन्तु ख्वाजा सा० अपनी गुप्त पुस्तक में लिखते हैं कि सब से बड़ी व पहली चीज जो चिश्तियों ने हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की निकाली वह गाना बजाना था। श्रीकृष्णजी के बांसुरी बजाने के किस्से तमाम हिन्दुओं के यहां प्रचलित हैं और उनकी पूजा में गाना बजाना शामिल है, इस गान को जानकर चिश्तियों के प्रचारकों ने अपने दीन में इसे शामिल किया और मुसलमान आलिमों के

मना करने पर भी अपने धुन में लगे रहे जिससे लाखों हिन्दुओं को अपनी ओर खींच लिया।

दूसरी बात चिश्तियों ने झंडे की क़ायम की। इन लोगों ने देखा कि हिन्दू लोग झण्डे झण्डियां देवी देवताओं पर चढ़ाते, अपने मन्दिरों के ऊपर लगाते और जब कहीं यात्रा को जाते हैं तो अपने २ झण्डे लेकर गाते बजाते जाते हैं। जहाँ रात को पड़ाव करते हैं वहाँ झण्डा गाड़ कर उसके चारों ओर बैठ जाते और गीत गाते व बाजे बजाते है। अतएव इन्होंने एक इसलामी झण्डा दिल्ली में खड़ा किया और उसी प्रकार से दिल्ली से अजमेर तक ख्वाजा मुइनुद्दीन के सालाना उर्स पर यात्रा करना आरम्भ किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि दिल्ली से अजमेर तक जितने गांव पड़ते थे उन गावों के लोग अपने २ झण्डे लेकर उसी प्रकार से शामिल होने लगे, जिस प्रकार से वे अपनी देवी देवताओं की यात्रा में शामिल होते थे। मुसलमान प्रचारकों ने इन यात्राओं से बड़ा लाभ उठाया, मोहम्मद साहेब, ख्वाजा साहिब तथा और मुसलमान बुजुर्गों की तारीफ़ व मुसलमानी मत की बातों के गीत उन गांव वालों की भाषा में बना २ कर हिन्दू गीतों के साथ मिला दिया करते थे। ख्वाजा हसन निज़ामी लिखते हैं कि दिल्ली से अजमेर तक मेवात और राजपूताने में लाखों आदमी केवल इस रस्म के द्वारा मुसलमान बने।

तीसरी बात चिश्तियों ने क़बर के गिर्द परिक्रमा करने को प्रथा जारी की, हिन्दुओं की तरह मुसलमान भी "काबे" की परिक्रमा करते ही हैं, अतएव चिश्तियों ने ख्वाजा अजमेरी तथा भारत की और बहुत सी क़बरों की परिक्रमा जारी करदी। इसी प्रकार से क़बरों पर फूल व चन्दन चढ़ाते तथा उनके समीप की नदियों या कुओं में स्नान करने की भी प्रथायें प्रचलित कीं, जिनका प्रभाव मूर्ख हिन्दुओं में बहुत पड़ा और अपने देवी देवताओं की

भांति उन्हें भी पूजने लगे। बहुत लोगों का ख़याल था कि हिन्दू हज़ारों देवी देवताओं को पूजते थे इसलिये मुसलमान क़बरों को पूजने लगे, पर ख़्वाजा सा० के उपरोक्त कथन से पता लगता है कि बेचारे मूर्ख हिन्दुओं का इसमें दोष नहीं है, यह षड्यन्त्र मुसलमान प्रचारकों ने रचा, अपनी क़बरों व दरगाहों आदि में वे सब बातें करते जो हिन्दू लोग अपने मन्दिरों में करते और अपने सिद्धान्तों के गीत उनकी भाषा में बना २ कर प्रचार करते, जिससे यदि तुरन्त नहीं तो कुछ काल में हिन्दू लोग उन्हें ग्रहण कर लेते थे और फिर उनके असर से मुसलमान होजाते थे।

चिश्ती लोगों ने उपरोक्त बातों के अतिरिक्त क़ब्र को नहला कर उसका पानी चरणामृत की तरह बांटते, जनेऊ की जगह हरे रंग का डोरा बांधते और माथे पर तिलक लगाने के बदले पीले रङ्ग के छींटे डालते, इन सब चालाकियां ने मूर्ख हिन्दुओं पर और अधिक प्रभाव डाला।

हैदराबाद के हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के षड्यन्त्र

हैदराबाद एक मुसलमानी रियासत है परन्तु जिस प्रकार से हिन्दू रियासतों में मुसलमानों को पूरी स्वतन्त्रता होती है उसी प्रकार किसी समय यहां भी थी यही नहीं बड़े २ ओहदों पर भी हिन्दू लोग थे। किन्तु जब "पान इस्लामिक" आन्दोलन का प्रादुर्भाव हुआ है तब से यहां के हिन्दुओं पर जो अन्याय व अत्याचार हो रहे हैं वे पाठकगण विश्वतरूप से जांच करने वालों के मुख से सुनें जो निम्न प्रकार से हैं—

हैदराबाद रियासत अब पहिलासा नहीं रहा। राज्य से हिन्दू हाकिम निकाले जा रहे हैं और उनके स्थान में मुसलमानों की भर्ती होरही है यहां की "सिविल लिस्ट" देखने से ज्ञात होगा कि

५ फी सदी हिन्दू भी अब नहीं रहे। हिन्दू लोग इतना तास्सुब देखकर पेट की खातिर मुसलमान होने लगे हैं। मुसलमान लोग अपने बालकों को खिलाने के लिये गांवों से हिन्दू लड़के लड़कियों का ले आते हैं और फिर उन्हें मुसलमान बना लेते हैं। विवाह योग्य हिन्दू लड़के लड़कियों की शादी मुसलमानों में कर देते हैं, फिर गांवों से और ले आते हैं, गांवों को हिन्दू औरतों का भी यही हाल है। पहिले वे १५, २०, २५)रु० मासिक पर धाय बनाकर लाई जाती हैं फिर मुसलमान बनाली जाती हैं। इस प्रकार से हजारों हिन्दू मुसलमान बनाली जाती हैं। जो हिन्दू चौके में बैठकर खाते थे वे अब मुसलमानी होटलों में मांस उड़ाते हैं। यहां एक यतीमखाना है जिसमें इस समय ५०० यतीम हैं। हिन्दू यतीम मुसलमान बना लिये जाते हैं. यहां हिन्दुओं का मुसलमान बनाने के लिये नाना प्रकार के प्रलोभन दिये जाते हैं, रियासत की ओर से हिन्दुओं पर न्याययुक्त व्यवहार नहीं हो रहा है क़रीब २ सब हिन्दुओं को जागीर ज़ब्त या कोर्ट करली गई हैं। रियासत में कोई मुसलमान हिन्दू नहीं बनाया जा सकता। आर्य्यों के लिये अपना मन्दिर बनाने की आज्ञा नहीं है पर किसी भी हिन्दू को धड़ल्ले से मुसलमान बना लिया जाता है। यदि यही दशा दश वर्ष तक जारी रही तो अनुमान किया जाता है कि रियासत भर के सारे हिन्दू या तो मुसलमान हो जावेंगे या रियासत छोड़ कर निकल जावेंगे।

अब तो हैदराबाद के निजामी शासन को हिन्दुओं के प्रति इतनी कठोरता बढ़गई है कि, वहां आर्य्य और हिन्दू प्रचारकों पर भी कड़ी पाबन्दियां लगादी गई हैं, उनको व्याख्यान देने नहीं दिया जाता, सभाएं और जलसे करने और जलूस निकालने की आज्ञा नहीं दी जाती, नये आर्यसमाज मन्दिर और नये हिन्दू मन्दिर बनाने की आज्ञाएं नहीं दी जाती हैं, १८-१८ वर्ष होगये जीर्णोद्धार तक मन्दिरों का नहीं करने दिया गया। त्यौहारों पर

दंगे कराकर प्रमुख हिन्दुओं और आर्य पुरुषों को फौजदारी के झूठे मुकदमों में फंसाया जाता है। इसकी बड़ी भारी करुण कथा है।

इन ही अत्याचारों से पीड़ित होकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और हिन्दू सभा ने और निजाम राज्य की आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने जन्म सिद्ध धार्मिक अधिकारों के लिये ता० २६-१२-३८ ई० को सत्याग्रह युद्ध को घोषणा करदी।

इस समय (जुलाई सन् १९३९ ई०) १३ हजार से अधिक सत्याग्रही वीर हैदराबाद की जेलों में कठोर से कठोर यातनाएं भोग रहे हैं। इस सत्याग्रह में बड़े २ वकील, बेरिस्टर, प्रोफ़ेसर, ज़मीदार, कारबारी, व्यवसायी, संन्यासियों और गुरुकुल के स्नातक भी जेल यातनाएं भोग रहे हैं। उत्साही आर्य युवकों ने तो बड़ा भारी भाग लिया, जेल में पैरों में लोहे के कड़े, हथकड़ियां, कालकोठरी, आड़े, बांके, कड़े डंडे, चक्की पीसना, पत्थर कूटना, खुदाई आदि की यातनाएं दी जा रही हैं और ऊपर से घोषित किया जाता है कि हिन्दू मुसलमान सबसे समान व्यवहार है परन्तु तो भी सत्याग्रही जत्थों पर पुलिस की रक्षा में आने पर भी गुण्डों के आक्रमण होते हैं और निजाम की पुलिस उनको रक्षा भी नहीं करती, अपराधी पकड़े भी नहीं जाते, न दण्ड पाते हैं। दसों आर्य वीरों के निर्दयता से प्राण लिये गये परन्तु अपराधी नहीं पकड़े गये, जेल की यातनाओं में भी अनेकों के बड़ी निर्दयता से प्राण लिये गये हैं। यह बड़ी रोमाञ्चकारी कथा है। जेलों तक में मारते २ अधमरे बेहोश हुए लोगों तक की सुन्नत करदी गई है, उनको घोर यातनाएं दे देकर माफ़ी मंगाई जाती है, यह हिन्दू जनता को मुसलमान बनाने का निज़ाम हैदराबाद सरकार का भारी षड्यन्त्र अब खुले रूप से प्रकट होगया है। हिन्दू धर्म की रक्षा करने के लिये अब अधिक हिन्दू जनता

को मोचना न चाहिये और अपने अधिकारों की रक्षा के लिये प्राणप्रण से डटे रहना चाहिये यही सत्य धर्म है। इसी प्रकार धार्मिक अधिकार मिल सकते हैं।

२४ लाख संथालों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र

यह सभी जानते हैं कि संथाल हिन्दू हैं इन्हें ईसाई बनाने के प्रयत्न तो बहुत दिनों से जारी हैं पर हिन्दुओं को इनकी ओर से ग़ाफ़िल देखकर अब मुसलमानों ने भी इनके अन्दर अपने प्रचारक भेजना आरम्भ कर दिया है और बड़े वेग से इन्हें मुसलमान बनाया जा रहा है। इनके अन्दर अभी तक किसी हिन्दू ने काम करना आरम्भ नहीं किया।

एक करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र

ख्वाजा हसननिज़ामी जिसे अब हिन्दू बच्चा २ जान गया है, ने जिन २ हथखण्डों से हिन्दुओं को तबाह व बर्बाद करने की ठानी है उसका पूरा २ हाल इस मण्डल द्वारा प्रकाशित "अलार्म-बेल अर्थात् ख़तरे का घंटा" नामी पुस्तक में बताकर हिन्दुओं को सावधान कर दिया था, किन्तु हिन्दुओं ने अभी तक अपनी रक्षा की ओर बहुत कम ध्यान दिया है। उनको ग़ाफ़िल देख ख्वाजा सा० ने अपने हथखण्डों को अमल में लाना आरम्भ कर दिया है। पंजाब, यू० पी० तथा बंगाल आदि देशों में नित्यप्रति उन्हीं हथखण्डों द्वारा सैकड़ों हिन्दू बच्चे और विधवायें उड़ाकर मुसल-मान बनाये जाते हैं। अतएव फिर हिन्दू भाइयों को सचेत किया जाता है कि सँभल जाइये और नीचे लिखे हथखण्डों से बचने का उपाय कीजिये।

१—मुसलमान हिन्दू साधुओं के भेष में शहर और गांवों में जावें, हिन्दुओं के यहां टिकते, खाते और मौका पाकर उन्हीं के

बच्चों व स्त्रियों को उड़ाते हैं। आज कल १, २ नहीं इस प्रकार की सैकड़ों घटनायें रोज होरही हैं। सब को चाहिये कि साधुओं को बहुत तहक़ीक़ात के पश्चात् अपने यहां ठहरावें और कपटी लोगों को सज़ा दिलावें।

२—मुसलमान आलिम अपने मुसलमान भाइयों को हिन्दुओं को नष्ट करने के लिये लेखों तथा उपदेशों द्वारा उकसा रहे हैं और जगह २ झूंठे और भड़काने वाले विज्ञापन बांटते व चिपकाते हैं, इनको सत्य न समझें और इनका खण्डन करें।

३—मुसलमानी रियासतों ने अपनी २ रियासतों से हिन्दुओं को जड़मूल से नष्ट करने की ठानली है। भूपाल और हैदराबाद आदि रियासतों की दिल दहलाने वाली घटनायें समाचार पत्रों में पढ़िये।

४—मुसलमान काश्तकार, दस्तकार और तिजारत पेशा लोग भी चुप नहीं हैं। ये सब ही हर समय ताक में लगे रहते हैं और मौक़ा पाते ही उनका सर्वनाश कर डालते हैं। तिजारत पेशा लोगों में से चूड़ी पहिनाने वाले और फेरी करके सामान बेचने वाले मुसलमान बिना किसी कठिनाई के हिन्दुओं के घरों में जाते और अपने हथखण्डों में कामयाब होते हैं। इस कारण किसी चूड़ी वाले, बिसायती या रङ्गरेज़ को कदापि घरमें न घुसनेदें नहीं तो पछतावेंगे।

५—मुसलमान मुलाज़िम पेशा लोग भी अपना २ फ़र्ज़ अदा कर रहे हैं। हिन्दू स्त्रियों को बहकाने और उनके सतीत्व नष्ट करने का काम बहुधा रेलवे और पुलिस के मुसलमान कर्मचारी बड़ी क्रूरता से करते हैं। हिन्दुओं के यहां मुसलमान सिपाही, कोचवान तथा मुन्शी वग़ैरह भी इस काम में प्रायः अपने मुसलमान भाइयों को ही मदद देते हैं। तांगे वाले स्त्रियों को धोखा देकर कहीं का कहीं

लेजाते, उनके साथ बलात्कार करते, माल व जेवर छीन लेते और अन्त में मुसलमान बना लेते हैं। इस कारण अपनी स्त्रियों व बच्चों को अकेले कभी मत भेजो। लड़के व लड़कियें गलियों व पाठशालाओं मे बहुत उड़ाये जाते हैं इसका प्रबन्ध करो। बीमार बच्चों व स्त्रियों को मसजिद में फूंक व झाड़ा दिलवाने को मत भेजो, वहां धर्मभ्रष्ट करने के समान हो रहे हैं, किसी फ़क़ीर व झाड़ा फूंकी करने वाले को अपने घर पर मत आने दो नहीं तो धर्म और स्त्री बच्चे खोइयेगा।

६—राजनैतिक लीडरों में से हिन्दू लीडर या तो चुप हैं या मुसलमानों को खुश करने के लिये हिन्दुओं को ही दबाते और कहते हैं कि यदि एक करोड़ हिन्दू मुसलमान हो जावें तो होजाने दो। दूसरी ओर मुसलमान लीडर हर प्रकार से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष इस काम में लगे हुए हैं। यदि कोई एक-आध मुसलमान इसके विरुद्ध दबी ज़बान से कुछ निकाल भी देता है तो उस पर .कुफ्र का फ़तवा लगाया जाता है और उसे तुरन्त माफ़ी मांगनी पड़ती है।

७—सम्पादक, कवि और पुस्तक लिखने वाले मुसलमान तो हाथ धोकर हिन्दुओं के पीछे पड़ गये हैं। अपने समाचारपत्रों, कविताओं और पुस्तकों में ९० फ़ीसदी झूठ लिख २ कर मुसलमानों को उकसाते हैं और अपने धर्मप्रचार में ये भी किसी से पीछे नहीं हैं।

८—डाक्टर व हकीम—यद्यपि अभी तक इस पेशे के लोगों की कोई शिकायत समाचारपत्रों में नहीं छपी किन्तु अपने धर्म-गुरुओं की आज्ञा के विरुद्ध ये भी कैसे चुप रह सकते हैं, यह बात सोचने की है।

९—रंडियां तथा गानेवालों द्वारा हिन्दुओं का मुसलमान बनना तो बहुत काल से जारी है। अब जब कि ख्वाजा सा० ने

उन्हें धार्मिक आज्ञा देदी है तो फिर भला इस काम में शिथिलता क्योंकर रह सकती है ?

१०—भीख मांगने वाले मुसलमान फ़कीरों को भी ख्वाजा सा० ने अपना फ़र्ज़ अदा करने को कहा है। ये लोग मुसलमानी सिद्धान्त सुना सुनाकर हिन्दुओं से भीख तो पहिले ही मांगा करते थे, अब मौका पा उनके बच्चों को भी उड़ा रहे हैं। यह काम रास्ता चलते बच्चों को मिठाई का लालच देकर या मारने की धमकी देकर अथवा बेहोशी की दवा सुंघा कर किये जाते हैं।

११—जासूस—मुसलमानों को हिन्दुओं का गुप्त से गुप्त भेद लेकर आना बिलकुल सरल बात है, क्योंकि हिन्दुओं का कोई घर ऐसा न मिलेगा जिसमें किसी न किसी प्रकार से मुसलमानों की घुस पैठ न हो।

कहां तक लिखा जावे। ख्वाजा साहब की बताई चालों का बड़े वेग से प्रचार किया जा रहा है और छोटे से लेकर बड़े तक इस समय हिन्दुओं के धन, जन तथा धर्म के अपहरण करने में उद्यत हैं। ऐसी दशा में हिन्दुओं को क्या करना चाहिये यह नीचे लिखा जाता है :—

१—प्रत्येक मंदिर के पुजारी व कथा बांचने वाले अपना अपना धर्म समझें कि वे अपने भक्तों व श्रोताओं को "ख़तरे का घण्टा" या इस पुस्तक का रोज़ सुनाया करें।

२—प्रत्येक जाति के चौधरी और गांव के मुखिया लोगों को चाहिये कि वे अपनी जाति की पंचायत और गांव में इसे सुनाना अपना धर्म समझें।

३—प्रत्येक शहर व ग्राम के लड़के लड़कियों के स्कूल व पाठशाला के अध्यापक व अध्यापिकाओं को चाहिये कि वे अपने २ स्कूल व पाठशालाओं में उपरोक्त ११ बातें बच्चों को कण्ठ करादें।

४—प्रत्येक ग्राम और नगर के मुख्य २ मुहल्लों में स्वयं-सेवकों का संगठन करके सेवासमितियां और हिन्दू-सभायें बनाना चाहिये और "खतरे के घण्टे" में बताये हुए नियमों के अनुसार अपने २ यहां के बच्चों व विधवाओं आदि की सूची बनाकर सदा उनकी देख रेख रखना चाहिये।

५—अपने २ यहां के नौजवान स्त्री पुरुषों को बलप्राप्ति के उपाय करना चाहिये और आने वाली मुसीबत के लिये सदा तैयार रहना चाहिये।

ये मोटी २ बातें हैं जिनको उठते, बैठते, सोते, जागते सदा ध्यान में रखना चाहिये। यदि अब भी कुछ न किया तो फिर रोने व पीटने के सिवा कुछ न कर सकियेगा। चेतावनी देना हमारा काम था सो कर दिया अब करना न करना आपके हाथ है। यदि अपनी व अपनी जाति तथा धर्म की रक्षा चाहते हैं तो कुछ कीजिये अन्यथा चुप हो रहिये और अपनी आंखों के सामने अपना धन, अपनी जाति, अपनी स्त्रियां, अपने बच्चे तथा अपना धर्म लुटने दीजिये।

——इति——